KHAN GLOBAL STUDIES
KGS Campus, Sai Mandir, Musallahpur Hatt, Patna - 6
Mob : 8877918018, 875735880

History

By : Prateek Sir

प्राचीन बिहार में शासन-प्रबन्ध

- यह सर्वविदित है कि पहले मनुष्य हुआ और उसने अपना समाज बनाया। आदिकाल में समाज का नेतृत्वकर्ता निश्चित रूप से कोई कुशल व्यक्ति ही रहा होगा, जिसने स्थिति के अनुरूप समाज का संचालन करने का अनुभव प्राप्त किया होगा। कालांतर में मनुष्य जाति ने प्रगति पथ पर चलता हुआ विकास करता गया। प्रगति का संप्रत्यय उतना ही प्राचीन है, जितना कि स्वयं मानव समाज का इतिहास प्रारंभिक समाज के लोगों ने आवश्यकताओं के अनुरूप एक शासन व्यवस्था स्थापित की। तभी से यह परम्परागत रूप से चली आ रही है। शासन का अर्थ है किसी शासन (सरकार) द्वारा अपने समाज का संचालन, प्रबंधन, नियंत्रण एवं निदेशन आदि कराना। प्राचीन बिहार के मगध, अंग, वैशाली तथा मिथिला में तात्कालीक आवश्यकताओं के अनुरूप शासन-व्यवस्था स्थापित हुआ। विज्जिका की श्कौमुदी महोत्सवश नामक नाटक में ई.पू. 700 से लेकर 700 ई. तक के राजवंशों का वर्णन है। बिहार के प्राचीन शासकों तितिस्क सौद्युम्न, नभगोदिष्ठा, इक्ष्वाकु, नीमी, मिथि आदि के आख्यान भी प्राचीन साहित्य में है। पुराणों में प्राचीन बिहार के सोलह सम्प्रभु राजाओं का वर्णन है।

वृहद्रथ वंशीय शासन

- मगध में चेदिराज चस्सु के शासन करने का उल्लेख मिलता है।
- महाभारत तथा पुराणों के अनुसार मगध राजवंश का प्रतामी राजा बृहद्रथ था। जय (महाभारत) संहिता के अनुसार बृहद्रथ का पुत्र जरासंध था।
- जरासंघ मगध का प्रतापी सम्राट था। भागवत पुरा (रकन्ध 10, अध्याय-72) और महाभारत के सभापर्व में भी जरासंघ-वध की कथा है। इसमें जरसंघ को 'वृहद्रथवंश' का नवम् राजा कहा गया है। उसने काशी, कौशल, चेदी, विर्दह, अंग, बंग कलिंग पाण्डय सौबिर, मंत्र, कांधार आदि राजाओं पराजित किया था। जय (महाभारत) संहिता के अनुसार जरासंघ वध के पश्चात मगध साम्राज्य प्रभावहीन हो गया था।
- जरासंघ के पश्चात् सहदेव मंगल का शासक हुआ। सहदेव के पश्चात् दृहद्रथ वंश के अंत (लगभग 727 ई. पू.) तक मगध पर 32 राजाओं के शासन करने का उल्लेख मिलता है।
- मगध और अंग के बीच प्रतिस्पर्धा लगी रहती थी।
- दृहद्रथ वंश का अंतिम राजा रिपुंजय था, जिसकी हत्या उसका एक मंत्री पुलिक ने कर दी थी और अपने नाबालिक पुत्र को मगध के सिंहासन आसीन कर दिया था। इससे नाराज होकर भट्टिय नामक एक सामंत ने उस नाबालिक राजा की हत्या कर स्वयं मगध का राजा बन बैठ । मगध राजा भट्टिय का पुत्र बिम्बिसार था।
- मगध का उल्लेख अथर्ववेद, दीपवंश, महावंश तथा पुराणों में हुआ है।

हर्यक वंशीय शासन

बिम्बिसार (544 ई. पू. 492 ई. पू)

- मगध शासक भट्टिय का पुत्र बिम्बिसार ने अपने शक्तिबल के आधार पर मगध में एक नवीन वंश की स्थापना की। बौद्धगंथ महावंश के अनुसार उसने 492 ई. पू. तक अर्थात 52 वर्ष (पुराणों के अनुसार 28 वर्ष) तक शासन किया था। मगध साम्राज्य का उत्कर्ष बिम्बितार के साथ हुआ था। सिंहली (श्रीलंका) के बौद्ध ग्रंथ 'महावंश' के अनुसार बिम्बिसार 15 वर्ष की अल्पायु का शासक बना था।
- बौद्ध ग्रंथों के अनुसार बिम्बिसार 80 हजार गांवों (जनपद) का अविपति था। उसके समय मिले-जुले कई गांवों को 'आपण' कहा जाता था।
- प्रारंभ में उसको राजधानी गिरिव्रज थी पर बाद में उराने राजगृह में विशाल दुर्ग का निर्माण कर वहां हस्तांतरित कर दिया। राजगृह गिरिव्रज के बहिर्भाग में था। उसने वैवाहिक संबंध स्थापित कर राज्य क विस्तार भी किया था। साथ ही अपनी विजयों से भी राज्य विस्तार किया था।
- कौशल नरेश प्रसेनजीत, जो तक्षशिला विश्वविद्यालय का स्नातक था, उसने अपनी बहन महाकोशला का विवाह बिम्बिसार से कर दहेज के रूप में, श्रृंगार खर्च के लिए काशी में एक लाख की आमदनी वाला क्षेत्र जागीर में उसे प्रदान किया था। महा कोशला से बिम्बिसार पुत्र कुणिक (अजातशत्रु) हुआ था।
- बिम्बिसार का एक विवाह वज्जि राजा चेटक की पुत्री चेल्लना वैदेही से हुआ था, जो वर्धमान महावीर के मामा की पुत्री थी। चेल्लना विदेही बिम्बिसार पुत्र हल्ल और बेहल्ल हुए। तीसरी पत्नी मद्रकुल (मध्य पंजाब) की राजकुमारी क्षेमा थी।
- बिम्बिसार आरंभिक शासन काल के दौरान वर्धमान महावीर छह वर्षो तक क्षेत्र में नवीन जैन दर्शन का प्रचार करते रहे थे। राजगृह में अनेक चाटुर्मास व्यतीत किये थे। (जैनग्रंथ-कल्प सूत्र)

- बिम्बिसार आरंभ मे जैन धर्मावलंबी था। महावीर जब राजगृह के गुर्णारसल चैत्य में निवास कर रहे थे, वहां पहुंचकर महावीर दर्शन किया था। उसने जीव हत्या तथा हर तरह की बली प्रथा पर राजकीय रोक लगा दी थी। यह प्रारंभ में महावीर अहिंसा-नीति का पालक था।
- उसकी शासन-व्यवस्था नियंत्रित दण्ड विधान, पुलिस व गुप्तचर व्यवस्था ससक्त थी। कृषकों, शिल्पियों, कारीगरों, विद्वानों आदि की राजकोश से सहायता प्रदान किया जाता था। महापात्र, सेनापति व्यहारिक आदि पदाधिकारियों का उल्लेख जैन व बौद्ध ग्रंथों में हुआ है। बौद्ध चीनी तीर्थ यात्री ह्वेनसांग ने 'बिम्बिसार मार्ग' 'बिम्बिसार पुल' का उल्लेख किया है वह कुल उमा का 1/6 भाग भूमि कर के रूप में लेता था। कई महाजनपदों के राजदूत भी राजगृह में नियान करते थे।
- बिम्बिसार प्रथम भारतीय शासक था, जिसने स्थायी सेना बना रखी थी, जिसके कारण उसे 'श्रेणिय' भी कहा जाता था। उसने पहली बार हाथी का प्रयोग युद्ध के दौरान किया था।
- बिम्बिसर के शासनकाल के दौरान भारत में 16 महाजनपद थे, जो आपस में प्रतिस्पर्धा करते थे। 16 महाजनपद थे– मगध , काशी, कौशल अंग, वज्जि, मल्ल, चेदि, वत्स, कुरू, पांचाल मत्स्य, शूरसेन, अस्मक, अवन्ति गांधार तथा कम्बोज । इनमें मगध बिम्बिसार के समय से उत्तरोत्तर विकास करता जा रहा था। जैन तीर्थकरों पार्श्व एवं महावीर के कारण मगध का महत्व काफी बढ़ गया था। बिहार से ही जैन धर्म 16 महाजनपदों तक विस्तार पाया था और वहां जैन धर्म बहुसंख्यकों का धर्म हुआ करता था।
- बिम्बिसार के शासन काल में मगध का विस्तार सम्पूर्ण बिहार में हो गया तथा उसका प्रभाव कोशल, मद्र, लिच्छवी, उनन्ति गांधार, कम्बोज, पंचाल, मत्स्य तक बढ़ गया था। अवन्ति नरेश प्रद्योन के साथ मैत्री संबंध स्थापित कर मगध का प्रभाव क्षेत्र बढ़ाया था। विधुर पंडित जातक महावग्ग तथा सोणदण्ड सुत से बिम्बिसार की अंग पर विजय की पुष्टि होती है।
- बिम्बिसार के शासनकाल में गौतन अथवा सिद्धार्थ ने गया के निरंजना नदी के किनारे (वर्तमान बोध गया) एक पीपल वृक्ष के नीचे (528 ई.पू.) सर्वोच्च ज्ञान (निर्वाण) प्राप्त किया था। तब से उन्हें 'बुद्ध' (सर्वोच्च स्थिति में पहुंचा हुआ व्यक्ति) कहा जाने लगा।
- गौतम जब बुद्ध बन गए तब वह गया से चलकर सारनाथ (वाराणसी) पहुँचे और वहाँ उन्होंने बौद्ध संघ की स्थापना की। बौद्ध संघ की स्थापना के साथ बौद्ध धर्म का प्रार्दुभाव हुआ। बुद्ध द्वारा बनाए चार आर्य सत्यों एवं इस पर आधारित आष्टांग मार्ग ने मगध, वैशाली, अंग तथा मिथिला में एक जबरदस्त धार्मिक क्रांति उत्पन्न कर दी। बुद्ध के विचारों में जो मौलिक सरलता थी उसने आमजन पर गहरा प्रभाव जमाया। बिम्बिसार ने भी हृदयस्थ भाव से बुद्ध के विचारों को आत्मसात कर लिया।
- बिम्बिसार के समय वैशाली की नगर यघु आम्रपाली की तरह राजगृह की नगर वधु शालवती बनायी गयी थी। चाहनेवाली से आम्रपाली एक रात्रि का जहाँ 50 कर्षापण लेती, वहीं शालवती 100 कर्षापण लेती थी।
- बिम्बिसार ने भिन्न-भिन्न शिल्पियों के लिए संघ का निर्माण करवाया था। जातक में 18 प्रकार के शिल्पकारों के संघ की चर्चा है।
- बिम्बिसार ने अपने राजवैद्य जीवक को बौद्ध भिक्षुओं की स्वास्थ्य सेवा के लिए गौतम बुद्ध के साथ लगा दिया था। राजवैद्य जीवक बुद्ध के महापरिनिर्वाण (483) ई.पू. तक उनके साथ रहे थे उसने काश्यप संहिता नामक ग्रंथ की रचना की थी।

अजातशत्रु (492-460 ई.पू.)

- बिम्बिसार के पश्चात् अजातशत्रु (कुणिक) उसके ज्येष्ठ पुत्र के रूप में मगध का उत्तराधिकारी हुआ। अनुश्रुति के अनुसार अजातशत्रु ने अपने पिता को धोखे से बन्दी बना लिया, फिर उसे भूखों मार दिया। परंतु जैन अनुश्रुतियाँ अजातशत्रु को पितृहन्ता नहीं मानती।
- बिम्बिसार की मृत्यु के बाद उसकी महारानी महाकोशला देवी पति शोक से दिवंगत हो गई। महाकोशला देवी कोशल नरेश प्रसेनजीत की बहन थी प्रसेनजीत ने महाकोशला देवी के श्रृंगार व्यय हेतु बिम्बिसार को, एक लाख की आमदनी वाली काशीजनपद प्रदान की थी। महाकोशला की मृत्यु के बाद प्रसेनजीत ने काशी जनपद को फिर से अपने अधिकार में ले लिया। इसी बात को लेकर कोशल और मगध के बीच युद्ध छिड़ गया। संयुक्त निकाय के अनुसार प्रथमत: प्रसेनजीत पराजित हुआ। किन्तु दूसरे दौर के युद्ध में अजातशत्रु पराजित होकर प्रसेनजीत का बन्दी बना। बाद में दोनों के मध्य संधि हो गई। कोशल नरेश प्रसेनजीत ने अपनी पुत्री वजिरा का विवाह अजातशत्रु के साथ कर दिया। इस तरह काशी पर अजातशत्रु का अधिकार यथावत बनी रही।
- अजातशत्रु पहले अंग की राजधानी चम्पा में प्रान्तपाल नियुक्त हुआ था वह एक महत्वाकांक्षी शासक था इसलिए उसने अपने पिता की राज विस्तार नीति को जारी रखा।
- मगध और वैशाली के बीच सोलह वर्षों तक युद्ध चलता रहा था। इस युद्ध में अजातशत्रु ने महासिलाकण्टक तथा रथमुसल अस्त्रों का प्रयोग सर्वप्रथम किया था। बौद्ध ग्रंथ सुमंगल विलासिनी के अनुसार यह युद्ध गंगा के किनारे रत्नों की खान पर अधिकार स्थापित करने के लिए हुआ था। जैन ग्रंथों के अनुसार अजातशत्रु अपने सौतेले भाईयों हल्ल और बेहल्ल से बिम्बिसार द्वारा प्रदत हाथी सेयणग तथा अठारह लड़ियों वाला हीरे को प्राप्त करने के लिए युद्ध किया था। भयवश हल्ल और बेहल्ल अपने नाना चेटक के संरक्षण में रह रहा था। हल्ल और

बेहल्ल को प्राप्त करने के लिए अजातशत्रु ने वैशाली पर आक्रमण किया। इस युद्ध में वैशाली नरेश चेटक पराजित हुआ। हल्ल और बेहल्ल प्रवज्या लेकर जैन साधु बन गए। इस जीत में अजातशत्रु का कर और सनिध का बड़ा योगदान रहा था। इस युद्ध के पश्चात बुद्ध के उपदेशों के आधार पर आजीवक सम्प्रदाय के संस्थापक मक्खलिगोसाल की मृत्यु इस युद्ध के दौरान हुआ था। युद्ध के पश्चात् बौद्ध आचार्यों ने श्सत् अपरिहाणि धम्म (राष्ट्रीय अभ्युदय के सात नियम) बनाये।

- अजातशत्रु की राज विस्तार नीति से भयभीत होकर चेटक अजातशत्रु के दुश्मन देशों से सम्पर्क बढ़ाने लगा। जैन ग्रंथ निरयावलि सूत्र के अनुसार चेतक ने नव लिच्छिवियों, नव मल्लों तथा काशी और कोशल के 18 गणराज्यों को एकत्र कर मगध नरेश अजातशत्रु के विरूद्ध एक मोर्चा बनाया था।
- काशी, कोशल, वैशाली को पराजित करने के बाद अजातशत्रु ने मल्लों को भी पराजित किया। मल्लों को पराजित करने से वर्तमान पूर्वी उत्तर प्रदेश का बहुत बड़ा भाग मगध में मिल गया था।
- मज्झिम निकाय के अनुसार अवन्ति (मालवा) के राजा चण्डप्रद्योत के आक्रमण के भय से अजातशत्रु ने राजगृह का दुर्गीकरण करवाया था। दोनों एक-दूसरे से भयाक्रांत थे। चण्डप्रद्योत का देहान्त हो जाने से अजातशत्रु उधर से निश्चिन्त हो गया और उसका ध्यान उत्तरी सीमान्त की ओर हो गया। उसने उत्तरी क्षेत्रों पर भी विजय प्राप्त की और मगध की सीमा हिमालय की तलहटी तक पहुँच गयी।
- भास के अनुसार अजातशत्रु ने अपनी कन्या पदमावती का विवाह भक्तराज उदयन के साथ किया था। उदयन मगध एवं अवन्ति के बीच सुलहकार था। इस सुलह के बाद भी दोनों प्रतिद्वंद्वी ही बने रह गए थे।
- अजातशत्रु की धार्मिक नीति उदार थी। आरंभ में वह जैन था परंतु गौतम बुद्ध के उपदेशों से प्रभावित होकर बुद्ध का अनुयायी बना था। द्वितीय सदी ई. पू. भरहूत स्तूप की एक वेदिका पर अजातशत्रु भगवान बुद्ध की वंदना करता है- 'अजातशत्रु भगवती वन्दते' उत्कीर्ण है जो उसके बौद्ध होने का पुरातात्विक प्रमाण है।
- अजातशत्रु के शासनकाल के आठवें वर्ष (483 ई. पू.) में गौतम बुद्ध का महापरिनिर्वाण प्राप्त हुआ था। बुद्ध के अवशेषों पर अजातशत्रु ने राजगृह में एक स्तूप का निर्माण भी करवाया था।
- अजातशत्रु के शासनकाल में प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन (483 ई. पू.) राजगृह में वैभार पहाड़ी की सप्तपर्णी गुफा में हुआ था, जिसकी अध्यक्षता महाकस्सप ने की थी। प्रथम बौद्ध संगीति में ही बुद्ध की शिक्षाओं को दो भागों- सुतपिटक एवं विनयपिटक के रूप में संकलित किया गया था। यह आज भी बौद्धों के लिए मार्गदर्शक ग्रंथ बनी हुई है।
- पुराणों के अनुसार अजातशत्रु 28 वर्ष तथा बौद्ध ग्रंथों के अनुसार 32 वर्ष शासन किया था।
- बौद्ध तथा जैन ग्रंथ अजातशत्रु को अपने-अपने मत का अनुयायी मानते हैं।
- बौद्ध ग्रंथों के अनुसार अजातशत्रु की हत्या उसके पुत्र उदयिन ने की थी, किन्तु जैन ग्रंथ ऐसा नहीं मानते है। जैन ग्रंथ परिशिष्टपर्वण उसे पितृभक्त कहता है।

उदायिन या उदयभद्र (460 455 ई.पू.)

- पालि ग्रंथों तथा बौद्ध ग्रंथ दीर्घनिकाय के अनुसार अजातशत्रु के पश्चात् उसका पुत्र उदायिन अथवा उदायिभद्र 459 ई. पू. के लगभग मगध के सिंहासन पर बैठा।
- कथाकोश तथा परिशिष्ट पर्वण में उदायिन को कुणिक (अजातशत्रु) का पुत्र कहा गया है।
- उदायिन की ख्याति विशेषकर पाटलिपुत्र नगर बसाने व निर्माण के कारण है। बिम्बिसार के विरूद्ध वैशाली, नव मल्लों, काशी, कोशल, अवन्ति, नव लिच्छिवियों आदि ने मिलकर एक मोर्चाबन्दी की थी। उस मोर्चाबन्दी से मुकाबला करने के लिए अजातशत्रु ने पाटलिपुत्र में एक दुर्ग का निर्माण करवाया था। यह दुर्ग सोन तथा गंगा के संगम पर (अब यह संगम पटना से कई मिल पश्चिम हट आया है) एक कुटिल कोण में अवस्थित था। इसके पूर्व लिच्छवी सैनिक, व्यापारी आदि गंगा पार कर पाटलिग्राम में महीनों पड़ाव डाले रहते थे। गंगा तथा सोन नदी के माध्यम से व्यापार हुआ करता था इसलिए भी यह क्षेत्र महत्वपूर्ण थी। चुंगी को लेकर लिच्छवियों और अजातशत्रु के सैनिक इसके पूर्व टकराते भी रहे थे। अजातशत्रु के अमात्य सुनीथ एवं वस्सकार ने राजगृह तथा पाटलिपुत्र में किलेबन्दी नए सिरे से करवाया था। अजातशत्रु ने बुद्ध का मत जानने के लिए उनके पास अपने अमात्य वस्सकार को भेजा भी था। परंतु उदायिन ने अपने शासनकाल में मगध की राजधानी राजगृह से पाटलिपुत्र में स्थापित की, इसकी पुष्टि परिशिष्टपर्वन, गार्गी संहिता तथा वायुपुराण से हो जाती है।
- उदायिन के काल में मगध और अवन्ति के बीच संघर्ष हुआ था। स्थविरावलि चरित के अनुसार उसने एक पड़ोसी राज्य पर आक्रमण किया और उसके राजा को मार डाला था। राजा के पुत्र ने अवन्ति की राजधानी उज्जयिनी में शरण ली और साधुवेश में पाटलिपुत्र में जाकर धोखे से उदायिन की हत्या कर दी।
- उदायिन जैन था। उसने पाटलिपुत्र के मध्य एक जैन चैत्यालय का निर्माण करवाया था। जैन साहित्य के अनुसार वह नियमित रूप से व्रत करता था और नियमित रूप से जैन आचार्यों से प्रवचन सुनता था।
- उदायिन के उत्तराधिकारियों ने लगभग 412 ई.पू. तक शासन किया।

- बौद्ध ग्रंथ दीपवंश एवं महावंश के अनुसार 'अनिरूद्ध' 'मुण्ड' एवं 'नागदासक' उदयिन के बाद मगध के शासक हुए थे। इन तीनों ने क्रम से अपने पिता की हत्या कर मगध सिंहासन हस्तगत किया था। उदादिन के उत्तराधिकारी अनिरूद्ध का सारा कार्यकाल लिच्छिवियों के ही मामलों को सुलझाने में व्यतीत हुआ था।

नागदाशक या दर्शक (518 - 412 ई.पू.)

- नागदाशक हर्यक वंश का अंतिम शासक था। ई.पू. 8वीं सदी के उत्तरार्द्ध (संभवत: 412 ई.पू.) में काशी का राजा शिशुनाग था। नागदासक के शासन काल में मगध की प्रजा ने शासक के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था। अमात्यों भी नागदासक के विरूद्ध उठ खड़े हुए थे। सभी ने काशी के प्रान्तपाल राजा शिशुनाग को मगध के राजा के रूप में वरण किया। नागदाशक का समय अधिकतर अजातशत्रु के जीते हुए क्षेत्रों पर अधिकार दृढ़ करने में बीता था।
- शिशुनाग ने अपनी राजधानी गिरिव्रज (राजगृह के निकट गिर्यक) में स्थापित की और अपने पुत्र कालवर्ण को काशीराज (प्रान्तपाल) का पद प्रदान किया। इसके बाद मगध का युवराज काशीराज भी होने लगा।

शैशुनाग वंशीय शासन

शिशुनाग (412-344 ई.पू.)

- बौद्धग्रंथ दीपवंश तथा महावंश के अनुसार हर्यक वंशीय मगध शासक नागदासक को सत्ताच्यूत कर काशी का प्रतिपाल शिशुनाग मगध का राजा बना था। शिशुनाग के राज्यारोहन के साथ मगध में शिशुनाग वंशीय शासन आरंभ हुआ।
- सिंहली बौद्ध ग्रंथों के अनुसार शिशुनाग ने 18 वर्षों तक शासन किया था।
- शिशुनाग ने अपनी राजधानी गिरिव्रज (राजगृह के निकट गिर्यक) में स्थापित की और अपने पुत्र काकवर्ण (कालाशोक) को काशिराज (प्रान्तपाल) का पद प्रदान किया। उसके शासनकाल में मगध की राजधानी पाटलीपुत्र हो गई। वैशाली बाद में उसकी वास्तविक राजधानी बनी।
- शिशुनाग भी एक महत्वाकांक्षी शासक था। अपने शासनकाल में अनेक युद्धों द्वारा उसने मगध की सीमा विस्तृत की। उसके शासन की सबसे महत्वपूर्ण घटना अवन्ति पर विजय प्राप्त कर उसे मगध साम्राज्य में मिलाना था।

कालाशोक या काकवर्ग (394-366 ई.पू.)

- बौद्ध ग्रंथ महावंश के अनुसार शिशुनाग की मृत्यु के बाद कालाशोक उसका उत्तराधिकारी हुआ। महावंश में उसे कालाशोक तथा पुराणों में काकवर्ण कहा गया है।
- कालाशोक बौद्ध था। उसके शासनकाल में ही बौद्ध धर्म की द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन वैशाली में 383 ई.पू. हुआ था। इस बौद्ध संगीति के पश्चात बौद्ध संघ स्थविरश और श्महासांधिक में विभाजित हो गया, जो बाद के क्रम में हीनयान तथा महायान के रूप में पहचान बनाई।
- वाणभट्ट रचित हर्षचरित के अनुसार काकवर्ण की हत्या धोखे से महापद्मनंद द्वारा 366 ई.पू. में चाकू मारकर कर दी थी।

नंदवंशीय शासन

महापद्मनंद (344-322 ई.पू.)

- महापद्म नंद ने शिशुनाग वंश का अंत कर जिस वंश की स्थापना की उसे नंद वंश कहा गया है।
- पद्मनंद दृढ़ और योग्य शासक था। उसका राजकोष भरपूर और सेना बलशाली एवं प्रचण्ड थी। अपनी अपार सम्पति एवं बल के कारण ही वह 'महापद्म' कहलाया। उसे 'उग्रसेन' भी कहा गया था।
- महापद्मनंद ने इक्ष्वाकु पांचाल, कुरू, हैहय, शूरसेन, मैथिल तथा कलिंग आदि राजाओं को विजित किया था। जैन ग्रंथ परिशिष्टपर्वन में उसका राज्य समुद्रपर्यत्न विस्तृत बताया है।
- महापद्मनंद के काल में मगध का साम्राज्य उत्तर-पश्चिम में सतलज और व्यास नदियों तक विस्तृत था, साथ ही राजस्थान का पूर्वी भाग, मालवा नर्मदा नदी की घाटी, दक्षिणापथ में गोदावरी, कृष्णा एवं तुंगभद्रा नदियों तक के प्रदेश तथा कलिंग भी मगध के अंग बन गये थे।
- पुराणों में उसे श्सर्व क्षेत्रांतकश अर्थात सब क्षत्रिया का नाश करने वाला तथा बौद्ध ग्रंथों में 'उग्रसेन' अर्थात प्रचण्ड सेना का स्वामी कहा गया है।
- महापद्मनंद के समय के क्षत्रिय रक्त पर अभिमान करने वाले राजवंशों की अखण्ड परम्परा का अंत हो गया। पुराणों में उसे 'कलि' या 'अंश' सभी क्षत्रियों का नाश करने वाला (सर्वक्षत्रात्मक) दूसरा 'परशुराम का अवतार 'एकराट' 'अनुलंघनिया' शासक आदि उपाधियाँ मिलती है।
- महापद्मनंद ने सारे साम्राज्य में एक मानक के नाप-तौल चलाये और नये सिरे से चुंगी की व्यवस्था की शिल्प, वाणिज्य व्यापार को प्रोत्साहित किया।
- खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख से महापद्मनंद द्वारा कलिंग विजय, जैन मुनि जिनसेन की एक जैन तीर्थंकर की प्रतिमा उठा ले जाने तथा कलिंग में एक नहर का निर्माण करवाने की भी जानकारी प्राप्त होती है।
- मत्स्यपुराण के अनुसार महापद्मनंद ने 28 वर्ष तक शासन किया था।
- बौद्ध ग्रंथ श्महाबोधि वंश में नंद शासकों के नाम इस प्रकार मिलते हैं।

1. उग्रसेन
2. पण्डुक
3. पण्डुगति
4. भूतपाल
5. राष्ट्रपाल
6. योविषाणक
7. दशसिद्धक
8. कैवर्त
9. धन (धनानंद)

धनानंद

- नंद वंश का अंतिम शासक धनानंद था, जो सिकन्दर का समकालीन था। यूनानी लेखकों ने अग्रमीज (उग्रसेन का पुत्र) कहा है, जिसके पास अपार अचल सम्पत्ति थी।
- यूनानी लेखक कर्टियस लिखता है कि धननंद के पास 20 हजार अश्वारोही, 2 लाख पैदल सेना, 2 हजार रथ तथा 3 हजार हाथी थे। इसी कारण सिकन्दर की सेना भी धनानंद की सैन्य शक्ति से भयभीत हो गया था।
- मद्रसाल धननंद का सेनापति था।
- धनानंद का साम्राज्य उत्तर हिमालय से लेकर दक्षिण में गोदावरी नदी तक तथा पश्चिम में सिन्धु नदी से लेकर पूर्व में मगध तक फैला हुआ था।
- धन एकत्र करने की अपार लालसा के कारण उसका नाम धनानंद पड़ा। उसने अस्सी करोड़ की धनराशि गंगा नदी के तल में एक चट्टान की गुफा में छुपा रखी थी। इस बात का उल्लेख यूनानी लेखकों ने भी किया था। सिकन्दर ने धननंद की शक्ति का पता तक्षशिला में ही लगा लिया था।
- ग्रीक इतिहासकारों ने धनानंद को 'अग्रमिस' अथवा 'जैनद्रमिस' कहा है।
- अभिमान से वशीभूत व अहंकारी धनानंद ने अपने दरबार में चाणक्य (विष्णुगुप्त) को अपमानित किया था। चाणक्य ने प्रतिज्ञा की थी कि जब तक धननंद को सत्ताच्यूत नहीं करूँगा तबतक अपनी चोटी (चुंदी) खुला रखूँगा। बाद में चंद्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य की सहायता से धननंद की हत्या कर नंदवंश का (322- 23 ई.पू.) में अंत कर दिया।

नंदवंशीय शासन

- नंद राजाओं की जैन अभिरूचि उनके कलपक और शालटल जैसे जैन मंत्रियों से सिद्ध होती है कि नंद शासक जैन धर्मावलंबी थे।
- पुराणों के अनुसार महापद्मनंद ने 28 वर्ष और उसके उत्तराधिकारियों ने 12 वर्ष राज्य किया। सिंहली बौद्ध ग्रंथों के अनुसार सारे नन्दों की सम्मिलित राज्यावधि केवल 22 वर्ष दी हुई है।
- नन्दों का राजकुल संभवत: 321-22 ई. पू. नष्ट हो गया।
- नंद वंश का राजनैतिक महत्व यह है कि नंद राजाओं ने भारत का बहुत बड़े भाग पर शासन स्थापित किया और एक राजनीतिक एकता स्थापित करने का सूत्रपात भी किया।
- मगध आर्थिक दृष्टि से अत्यंत समृद्धशाली साम्राज्य बन गया था। आर्थिक आधार ने पाटलिपुत्र को शिक्षा, कला, साहित्य, वाणिज्य व्यापार का प्रमुख केन्द्र बना दिया था।
- नंद शासक जैन मत के पोषक थे। इसकी पुष्टि विशाखादत्त की नाट्यकृति श्मुद्राराक्षस से भी होती है।

मौर्य वंशीय शासन

चन्द्रगुप्त मौर्य (321-298 ई.पू.)

- मौर्य राजवंश का संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य था, जिसने मगध सम्राट धननंद को पराजित कर सत्ता पर आसीन हुआ था। धनानंद पर चंद्रगुप्त की विजयगाथा का वर्णन नाटककार विशाखादत्त द्वारा रचित नाटक मुद्राराक्षस में वर्णित है।
- चन्द्रगुप्त मौर्य अपने गुरू विष्णुगुप्त 'चाणक्य' की सहायता से मगध के राजसिंहासन पर 321 ई. पू. में सत्तारूढ़ हुआ था। वह प्रथम भारतीय राजा था, जिसने वृहत्तर भारत पर अपना शासन स्थापित किया था।
- यूनानी लेखक जस्टिन ने चन्द्रगुप्त (ऐंड्रोकोट्टोसे) के संबंध में लिखा है कि वह एक साधारण परिवार से था।
- विविध साक्ष्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि चन्द्रगुप्त का लालन-पालन मोरिय (मोर पक्षी पकड़ने वाला) जाति में हुआ था। शिकारी बच्चों के साथ एक दिन वह 'राजकीलम' नामक एक नाटक खेल रहा था, जिसमें वह राजा बना था। चाणक्य ने अपनी दिव्य दृष्टि से उस बालक में राजत्व की प्रतिभा तथा लक्षण देखें। तत्काल वह उसके अभिभावक से उसकी शिक्षा-दीक्षा के लिए एक हजार कार्षाषण देकर उसे प्राप्त कर लिया। चाणक्य ने उसे तक्षशिला के एक प्रख्यात विद्यापीठ में शिक्षा के साथ-साथ अप्राविधिक विषयों और व्यावहारिक तथा प्राविधिक कलाओं से भी दीक्षित करवाया। पश्चात् तक्षशिक्षा विश्वविद्यालय में उसे सैन्य शिक्षा दिलवाई, जिससे चन्द्रगुप्त सैन्य विधाओं तथा कलाओं में निपुण हो गया। इस तरह चाणक्य ने चन्द्रगुप्त के जीवन की धारा को एक नई दिशा में मोड़ (चन्द्रगुप्त के संबंध में कई विरोधाभाषी अनुभूतियों भी है) दिया।
- बौद्ध एवं जैन साहित्य में मौर्य का अर्थ मयूर (मोर) शब्द के साथ बताया गया है। मुद्राराक्षस नाट्यकृति में उसे अज्ञात 'कुल' का बताया है।
- बौद्धग्रंथ महावंश टीका से पता चलता है कि तक्षशिला में चन्द्रगुप्त की शिक्षा समाप्त हो जाने के बाद चाणक्य तथा चंद्रगुप्त, दोनों विभिन्न स्थानों से सेना के लिए सैनिक ढूँढने निकल पड़े। इस प्रकार जो सेना तैयार हुई उसे चाणक्य ने चन्द्रगुप्त के सेनापतित्व में रख दिया।
- 305 ईसा पूर्व में चंद्रगुप्त मौर्य ने सिंधु नदी किनारे सेल्यूकस को पराजित किया था।
- चन्द्रगुप्त का विवाह सेल्यूकस निकेटर ने अपनी पुत्री सेल्यूसिया के साथ कर दिया। इस वैवाहिक संबंध का विस्तृत उल्लेख केवल एप्पियानस ने किया है। प्लूटार्क के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य ने सैल्यूकस को 500 हाथी उपहार में दिए। सैल्युकस ने चंद्रगुप्त मौर्य को दहेज में चार राज्यप्रांत एरिया (हेरात), अराकोशिया (कंधार), जेड्रोशिया (मकरान) पेरीपिनिषदाई (काबुल) प्रदान किए। सेल्यूकस ने अपने एक राजदूत मेगस्थनीज

को उसके दरबार में भेजा।

- यूनानियों को पराजित करने के पश्चात चाणक्य और चन्द्रगुप्त संपूर्ण उत्तरी और मध्य भारत पर आधिपत्य करते हुए मगध पहुँचे और पाटलिपुत्र को घेर लिया। युद्ध में मगध सम्राट ध ननंद मारा गया। प्रजा भी उससे घृणा करती थी। इस तरह चन्द्रगुप्त मौर्य 321 ई.पू. में मगध के सिंहासन पर आसीन हुआ मिलिन्दपन्हों में नन्द और चन्द्रगुप्त के बीच युद्ध का वर्णन प्राप्त होता है।
- चन्द्रगुप्त मौर्य जैन था। उसके शासनकाल के दौरान ही प्रथम जैन-संगिति का आयोजन पाटलिपुत्र में जैनाचार्य स्तूलभद्र की अध्यक्षता में हुई थी। इस संगीति के पश्चात 14 पूर्वी (पुरानी जैन स्मृतियाँ) के स्थान पर 12 अंगों की रचना की गई, जो पाटलिपुत्र वाचना के नाम से जाना गया। इसके पश्चात ही जैन धर्म में विचारों को लेकर स्वेताम्बर एवं दिगम्बर में विभाजित हो गया।
- चन्द्रगुप्त मौर्य के समय की अभिलेखों से पता चलता है कि मौर्य कालीन बिहार की भाषा पाली एवं अर्द्धमागधी तथा लिपि ब्राह्मी थी।
- चन्द्रगुप्त अपनी वृद्धावस्था में अपने गुरु भद्रबाहु के साथ कर्नाटक के जैन तीर्थ स्थल श्रवणबेलगोला में रहने लगा था और वहीं जैन परंपरानुसार सल्लेखना पद्धति से उसने 298 ई. पू. देह का त्याग कर दिया। इस बात का उल्लेख जैन ग्रंथ राजावली कथा में हुआ है।
- यूनानी ग्रंथों में चन्द्रगुप्त मौर्य के तीन नामों का उल्लेख मिलता है 1. सैन्ड्रोकोट्स इस शब्द का प्रयोग स्ट्रेबो, एरियन एवं जस्टिन ने किया है। 2 एन्ड्रोकोट्स इस नाम का प्रयोग एप्पियानस और प्लूटार्क ने किया है। 3. एन्ड्रोकोप्टस इस नाम का प्रयोग नियार्कस ने किया है। 28 फरवरी, 1793 को सर विलियम जोन्स ने रॉयल एशियाटिक सोसायटी के सम्मुख बताया कि ये तीनों नाम चन्द्रगुप्त मौर्य के ही हैं।

बिन्दुसार (298-273 ई.पू.)

- पुराण, दीपवंश, महावंश तथा सिंहली बौद्ध ग्रंथों में स्पष्ट उल्लेख है कि चन्द्रगुप्त का उत्तराधिकारी बिन्दुसार था। आर्यभजुश्रीमूलकल्प के अनुसार बिन्दुसार उस समय अल्पवयस्क था।
- जैन साहित्य के अनुसार बिन्दुसार की माता का नाम दुर्धरा था। बौद्ध ग्रंथ महावंश के अनुसार बिन्दुसार की पत्नी का नाम धम्मा तथा 'अशोकावदान' में सुभद्रांगी बताया गया है।
- बिन्दुसार के शासनकाल में तक्षशिला में दो बार विद्रोह हुए थे। प्रथम विद्रोह को शांत करने के लिए अपने पुत्र अशोक को भेजा था, जिसने शस्त्र प्रयोग के बिना ही विद्रोह को शान्त कर दिया था दूसरे विद्रोह के लिए बिन्दुसार पुत्र सुसीम को भेजा गया था।
- बिन्दुसार के राजदरबार में यूनानी शासक एन्टीयोकस प्रथम ने डायमेक्स को राजदूत बनाकर पाटलिपुत्र भेजा था।
- सीरिया नरेश फिलाडेल्फस (टालमी द्वितीय) ने डियानीसियस को राजदूत बनाकर बिन्दुसार के दरबार में भेजा था।
- चीनीग्रंथ 'फा-यूएन-चु-लिन' में 'बिन्दुपाल' कहा गया है। वायुपुराण में भद्रसाल, जैन ग्रंथ में सिंहसेन, कुछ पुराणों में नारिसार, यूनानी लेखकों ने अमित्रो के डीज अभित्रोजेडस, मित्रोचोट्स तथा अलित्रोचेडस कहा है। इससे स्पष्ट है कि वह विदेशों में भी सम्माननीय था।
- बिन्दुसार ने अमित्रघात की उपाधि धारण की थी। अर्थात शत्रुओं को नाश करने वाला परंतु वह शांतिप्रिय तथा उदार भी था।
- बिंदुसार ने सीरिया के शासक एंटीयोकस से तीन वस्तुओं की मांग की थी शराब, मीठा अंजीर, दार्शनिक।
- पुराणों के अनुसार बिन्दुसार ने 25 वर्षों तक शासन किया तथा 273 ई. पू. में रोगग्रस्त होने के कारण उसकी मृत्यु हो गई। इस घटना का उल्लेख स्थानीय शिलालेखों तथा स्मारकों में मिलता है।

अशोक (273-232 ई.पू.)

- महाबोधिवंश, चीनी बौद्ध ग्रंथ फायुएन चू-लिन तथा तारानाथ कहते हैं कि सत्ता प्राप्ति के लिए गृहयुद्ध हुआ तथा अपने भाईयों का वध करके ही अशोक साम्राज्य प्राप्त कर पाया था।
- उसका राज्यारोहण 269 ई.पू. में हुआ था। जबकि वह 273 ई. पू. में सिंहासन पर बैठा। बौद्धग्रंथ द्विव्यावदान के अनुसार बिन्दुसार ने सुसीम को राजतिलक करने की आज्ञा दी परंतु अमात्यों ने छल द्वारा अशोक का राजतिलक करा दिया। इस तरह अशोक ने बिन्दुसार की इच्छा के विरूद्ध शासन-सत्ता हथिया ली थी। उसके राज्याभिषेक तथा सिंहासनारोहण के बीच चार वर्ष का अंतर होने के कारण उत्तराधिकार के युद्ध हो सकता है।
- महाबोधिवंश में उसकी माता का नाम 'धम्मा' तथा इसी ग्रंथ की टीका में उसका नाम 'अग्गमहिषी' बताया गया है। परंतु इतिहासकारों ने प्राप्त साक्ष्यों के विवेचन से यह निश्चित किया है कि उसकी माता का नाम 'सुभद्रांगी' था।
- मास्की तथा गुर्जरा के अभिलेखों में उसका नाम श्अशोकश तथा पुराणों में श्अशोकवर्द्धन मिलता है। अभिलेखों में उसे 'देवानामपिय' तथा 'देवानामपियदशि' आदि उपाधियों से विभूषित किया गया है।
- अशोक प्रथम भारतीय सम्राट था जिसने कहा कि 'राजा प्रजा' का सेवक है। अपनी प्रजा की भलाई के लिए कई कल्याणकारी कार्य किए। प्रजा की समस्याओं के समाधान हेतु महामात्रों एवं राजुको की नियुक्ति की।
- अशोक के शासनकाल की सबसे महत्वपूर्ण घटना कलिंग के

साथ उसका युद्ध है जो उसके राज्याभिषेक के आठ वर्ष बाद हुआ था तेरहवें शिलालेख में लिखा है कि श1 लाख 50 हजार शत्रु बंदी हुए, ''1 लाख हत हुए और उनसे कई गुणा मर गये।'' अशोक का हृदय इस घटना से इतना द्रवित हुआ कि उसने शपथ ली कि साम्राज्य के विस्तार के लिए वह कभी शस्त्र नहीं ग्रहण करेगा। इसके बाद 'मेरीघोष के स्थान पर 'धम्मघोष' का शांतिप्रद नाद गुंजने लगा। अभिलेख से पता चलता है कि वह बौद्ध भिक्षु उपगुप्त के प्रभाव से बौद्ध अनुयायी बना था।

- अशोक की उदारता इतनी सार्वभौमिक थी कि उसने अपने धार्मिक विचार प्रजा पर लादने का यत्न नहीं किया। अन्य सम्प्रदायों को भी अपनी संरक्षता का लाभ दिया आजीवकों के लिए बराबर (गया) में गुफाएँ तैयार करवाकर उन्हें दी अशोक के अभिलेख 1 वहां आज भी अंकित हैं।
- तृतीय बौद्ध संगीति का आयोजन 250 ई. पू. में उसने पाटलिपुत्र में मोग्गलिपुत्र तिस्स (उपगुप्त) की अध्यक्षता में करवाया था।
- अष्टम शिलालेख में उसके बोध गया यात्रा का उल्लेख है। वह स्थविर शाखा का बौद्ध था। अष्टागिंक मार्ग के प्रसार के लिए उसने अपने पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा को सिंहल (लंका) भेजा। इस तरह अशोक बौद्ध धर्म के संरक्षक के रूप में प्रस्तुत हुआ । (सांची, सारनाथ और कौशाम्बी अभिलेखों के अनुसार)
- धर्म प्रचार के लिए अशोक ने कई देशों में धर्म प्रचारक भेजे जिनका उल्लेख बौद्धग्रंथ महावंश में मिलता है-

धर्मप्रचारक	**देश**
महेन्द्र तथा संघमित्रा	श्रीलंका
मज्झान्तिक	कश्मीर तथा गांधार
महारक्षित	यूनान
महाधर्मरक्षित	महाराष्ट्र
महादेव	महिष मण्डल (मैसूर)
रक्षित	बनवासी (कर्नाटक)
धर्मरक्षित	अपरान्तक
मज्झीग	हिमालयी देश
सोना तथा उत्तरा	सुवर्ण भूमि

इस प्रकार विभिन्न उपायों द्वारा इसने राज्य के अन्दर और बाहर धम्म का प्रचार करवाया। अहिंसा के प्रचार के लिए युद्ध बन्द कर दिए। जीवों का वध रोकने के लिए प्रथम शिलालेख में विज्ञप्ति जारी की। उसने घोषणा की कि ऐसे सामाजिक उत्सव नहीं होने चाहिए जिनमें सुरा-पान, माँस-भक्षण, मल्लयुद्ध आदि हों। विहार यात्राएँ बन्द कर दी गई और उसके स्थान पर धम्म यात्रायें प्रारंभ कर दी गई। उसने अपने राज्याभिषेक के 14वें वर्ष धम्म महामात्र नामक एक अधिकारी की भी नियुक्ति की। इसका उल्लेख 5 वें शिलालेख में है। तृतीय शिलालेख में युक्त, रज्जुक और प्रादेशिक आदि अधिकारियों के नामों का उल्लेख है।

- वह 232 ई.पू. में 40 वर्षों के दीर्घ शासन के बाद अशोक का निधन तक्षशिला (अब पाकिस्तान) में हुआ।
- सारनाथ का स्तंभ सिंह शीर्ष युक्त स्तंभ है। उसके धर्मचक्र को भारत सरकार ने राष्ट्रीय चिह्न के रूप में ग्रहण कर सर्वहितकारी शासक अशोक के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की है।

अशोक के उत्तराधिकारियों के विषय में प्रामाणिक रूप से कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। अशोक के एक लघु अभिलेख में उसके पुत्र तीवर का उल्लेख है परन्तु अन्य साक्ष्यों के कारण उसे अशोक का उत्तराधिकारी स्वीकार नहीं किया जा सकता। दिव्यावदान के अनुसार अशोक के बाद 6 शासकों ने शासन किया था। नागार्जुनी पहाडी के अभिलेख के अनुसार दशरथ उसका पौत्र था।

दशरथ (लगभग 224-216 ई.पू.)

- अशोक की मृत्यु के पश्चात मौर्य साम्राज्य पश्चिमी तथा पूर्वी दो भागों में विभाजित हो गया था। पूर्वी भाग में, जिसकी राजधानी पाटलिपुत्र थी. अशोक पौत्र दशरथ शासक बना।
- दशरथ का उल्लेख मत्स्य पुराण के अलावा आजीवकों को प्रदत्त नागार्जुनी पहाड़ी गुफाओं में भी है। आजीविकों के लिए उसने ध्यानमग्न होने के लिए बराबर (जहानाबाद) में कई गुफाओं का निर्माण आज करवाया था। इस गुफा में दशरथ के अभिलेख, भी अंकित हैं।
- पुराणों के अनुसार दशरथ का शासनकाल आठ वर्षों का था तथा उसके पिता (जालीक कुणाल अथवा तीवर) का भी शासनकाल आठ वर्षों का ही रहा था। दशरथ के पश्चात देववर्मन, (लगभग 206-199 ई. पू.) शतधनुस् (लगभग 199-191 ई. पू.), वृहद्रथ (लगभग 191 184 ई. पू.) के शासन करने का उल्लेख भी मिलते हैं।

मौर्यकालीन शासन-प्रबन्ध

- यूनानी लेखक प्लूटार्क के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य और सेल्यूकस के बीच संधि के बाद चन्द्रगुप्त मौर्य ने 6 लाख की सेना लेकर संपूर्ण भारत को रौंद डाला। इस आधार पर चन्द्रगुप्त मौर्य की पश्चिमी सीमा हिन्दुकुश पर्वत से पूरब में बंगाल तक तथा उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में मैसूर तक राज्य विस्तृत हो गई। चन्द्रगुप्त मौर्य के पश्चात् बिन्दुसार, अशोक आदि मौर्य शासकों ने शासन व्यवस्था को और भी अधिक सुदृढ़ किया।
- मौर्यकालीन शासन व्यवस्था पाँच भागों में विभक्त था- 1. उत्तरापथ- इसकी राजधानी तक्षशिला थी। इसके अंतर्गत कम्बोज, गान्धार, कश्मीर, पंजाब तथा अफगानिस्तान था। 2. अवन्ति- इसकी राजधानी उज्जयिनी थी। इसके अंतर्गत काठियावाड़, मालवा गुजरात तथा राजपुताना के क्षेत्र थे। 3. प्राची- इसकी राजधानी पाटलिपुत्र थी। प्राची को मगध भी कहा जाता था। इसके अंतर्गत उत्तरप्रदेश, बिहार तथा बंगाल के क्षेत्र थे। 4. दक्षिणापथ- इसकी राजधानी सुवर्णगिरि थी। विंध्याचल के दक्षिण में स्थित क्षेत्र इस प्रदेश के अंतर्गत आता था। 5. कलिंग

इसकी राजधानी तोसली थी। मौर्यकालीन प्रांत चक्र कहलाता था।

- चन्द्रगुप्त मौर्य की शासन व्यवस्था के संबंध में मेगस्थनीज के इंडिका और कौटिल्य के अर्थशास्त्र से जानकारी प्राप्त होती है। उसकी शासन व्यवस्था कुछ इस प्रकार से थी - (क) केन्द्रीय शासन (ख) प्रांतीय शासन (ग) नगर प्रशासन (घ) ग्राम प्रशासन।

(क)केन्द्रीय शासन - मौर्य प्रशासन भारत की प्रथम केन्द्रीय प्रशासन थी। प्रशासन का केन्द्र बिन्द राजा होता था।

वह कार्यपालिका, व्यवस्थापिका एवं न्यायपालिका का प्रमुख होता था। मौर्य राजा ही समस्त शक्ति का स्त्रोत था। वह विद्वत परिषद की सहायता से शासन करता था यूनानी ग्रंथ इण्डिका से पता चलता है कि राजा की अंगरक्षिकाएँ सुरक्षा के लिए राजा को चारों तरफ से घेरे रहती थीं। मंत्री परिषद के सदस्यों का चुनाव अमात्यों में से उपधा परीक्षण के बाद होता था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में मंत्रिण: का भी उल्लेख है। इसमें कुछ अति महत्वपूर्ण मंत्री होते थे। मंत्रिण: में संभवत: प्रधानमंत्री, पुरोहित, सेनापति, सन्निधाता और युवराज सम्मिलित थे। यह आत्यधिक (तुरन्त) कार्यों पर राजा को सलाह देते थे।

ख. प्रांतीय शासन- केन्द्र कई चक्रों (प्रांतों) में बंटा था। सम्पूर्ण मौर्य साम्राज्य चार प्रान्तों में बंटा हुआ था- 1. पूर्वी प्रांत इसमें आधुनिक उत्तर प्रदेश, बंगाल बिहार एवं उड़ीसा सम्मिलित थे। 2. उत्तरी-पश्चिमी प्रांत पंजाब, सिन्ध, कश्मीर, बलुचिस्तान तथा अफगानिस्तान थे। 3. पश्चिमी प्रांत- इसके अंतर्गत आधुनिक मालवा, गुजरात, काठियावाड तथा राजस्थान थे। 4. दक्षिण प्रात विंध्याचल पर्वत से लेकर मैसूर तक के प्रदेश थे।

- प्रांतों का प्रमुख प्रांतपति कहलाता था। ये मौर्य राजवंश के ही होते थे।
- केंद्रीय शासन की ही भांति प्रांतीय शासन में भी मंत्रीपरिषद होती थी। प्रांतपति का केन्द्र से सीधा सम्पर्क होता था।
- प्रांतों को 'चक्र' कहा जाता था। इन प्रांतों के अंतर्गत कई मण्डलों को प्रशासनिक विभाजन किया जाता था। जिन पर महामात्य नामक अधिकारी होते थे। मण्डलों के अधिकारियों के नाम प्रदेष्टा या प्रादेशिक भी मिलते हैं।
- मण्डल जिलों में विभक्त थे जिन्हें आहार या विषय कहा जाता था। यह विषयपति के अधीन होता था।

ग. नगर प्रशासन- मेगस्थनीज की इण्डिका से पाटलिपुत्र जैसे बड़े नगर प्रशासन का वर्णन मिलता है। उसने नगर के प्रमुख अधिकारी को एस्ट्रोनोमोई कहा है। यही सड़क निर्माण का भी अधिकारी था।

- नगर का प्रमुख नगराध्यक्ष कहलाता था। नगर प्रशासन में समितियों का महत्वपूर्ण सहयोग रहता था, जिसकी संख्या 6 थी- 1. शिल्पकला समिति इसका मुख्य कार्य नगर के सड़कों एवं भवनों का निर्माण करना एवं नगर की सफाई की व्यवस्था करना था। 2. विदेश समिति- इसका मुख्य कार्य विदेशियों के रहने, खाने, दवा, मृत्यु हो जाने पर उनकी परम्परा के अनुसार शवाधान की व्यवस्था करना और अप्रत्यक्ष रूप से उनकी गतिविधियों पर नजर रखना था। यह व्यवस्था संभवत: यूनानियों के लिए की गयी थी। 3. जनसंख्या समिति इसका मुख्य कार्य जन्म और मृत्यु का रजिस्टर तैयार करना था। 4. उद्योग-व्यापार समिति इसका मुख्य - कार्य उद्योग एवं व्यापार का नियंत्रण, वस्तुओं के मूल्यों का निर्धारण, वस्तुओं की बिक्री की व्यवस्था आदि था। 5. वस्तु निरीक्षक समिति बाजार में बिकने वाली वस्तुओं में मिलावट पर रोक लगाती थी। 6. करनिरीक्षक समिति इस समिति का कार्य प्रत्येक विभाग से प्राप्त करों के वितरण रखना एवं करों की चोरी को रोकना करो की चोरी करने वालों को मृत्युदंड दिया जाता था।
- कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अनुसार नगर का प्रमुख अधिकारी 'नागरक' होता था।

घ. ग्राम प्रशासन- ग्राम प्रशासन ग्रामीण या ग्रामीणी कहलाता था। 5-10 गाँव की व्यवस्था 'गोप' नामक अधिकारी करता था। इसके ऊपर स्थानीय होता था जो जनपद के चौथाई भाग का प्रबन्ध करता था।

मंत्री परिषद- राजा एवं प्रांतपति की सहायता के लिए एक मंत्रीपरिषद होता था। इस मंत्री परिषद में 12 से लेकर 20 मंत्री होते थे। मंत्री परिषद के प्रत्येक सदस्य थे। 12 हजार पण वार्षिक वेतन मिलता था निर्णय बहुमत द्वारा लिए जाते थे। राजा या प्रांतपति मंत्रीपरिषद के निर्णय स्वीकार करने के लिए बाध्य नहीं था। गुप्तचरों तथा सलाहकारों की सहायता से राजा एवं प्रांतपति अंतिम निर्णय पर पहुँचता था।

अमात्य मण्डल- केन्द्रीय शासन की सुविधा के लिए कई केंद्रीय एवं प्रांतीय व्यवस्था कई विभागों में विभक्त था, जिसे तीर्थ कहा जाता था। प्रत्येक विभाग के प्रमुख को अमात्य कहा जाता था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में 18 तीर्थों का उल्लेख है, जो निम्नलिखित प्रकार है-

1. प्रधानमंत्री और पुरोहित पुरोहित प्रमुख धर्माधिकारी होते थे। चन्द्रगुप्त मौर्य के समय ये दोनों विभाग कौटिल्य के अधीन थे। बिन्दुसार के समय में विष्णुगुप्त कुछ समय तक उसका प्रधानमंत्री था उसके बाद खल्लाटक को प्रधानमंत्री बनाया गया। अशोक का प्रधानमंत्री राधागुप्त था।
2. समाहर्ता- यह राजस्व विभाग का प्रधान अधिकारी था।
3. सन्निधाता यह राजकीय कोषाध्यक्ष था।
4. सेनापति यह युद्ध विभाग का मंत्री था।

5. युवराज राजा का उत्तराधिकारी होता था।
6. प्रदेष्टा यह फौजदारी न्यायालय का न्यायाधीश होता था।
7. नायक यह सेना का नेतृत्व करता था।
8. कर्मान्तिक - यह उद्योग-धन्धों का प्रधान निरीक्षक होता था।
9. व्यवहारिक यह दीवानी (धर्मस्थीय) न्यायालय- का मुख्य न्यायाधीश होता था।
10. मंत्रिपरिषदाध्यक्ष यह मंत्रिपरिषद का अध्यक्ष था।
11. दण्डपाल - यह सेना की सामग्रियों को जुटाने वाला प्रधान अधिकारी था।
12. अन्तपाल यह सीमावर्ती दुर्गा का रक्षक था।
13. दुर्गपाल देश के भीतरी दुर्गों का प्रबन्धक था।
14. नागरक - नगर का प्रमुख अधिकारी होता था।
15. प्रशास्ता- राजकीय कागजातों को सुरक्षित रखने वाला तथा राजकीय आज्ञाओं को लिपिबद्ध करने वाला प्रधान अधिकारी था।
16. दौवारिक- राजमहलों की देख-रेख करने वाला प्रधान अधिकारी था।
17. अन्तर्वशिक- सम्राट की अंगरक्षक सेना का प्रधान अधिकारी था।
18. आटविक यह वन विभाग का प्रधान अधिकारी था।

गुप्तचर व्यवस्था

- मौर्यकालीन गुप्तचर व्यवस्था अत्यंत ही व्यवस्थित एवं संगठित थी। गुप्तचरों को गूढ पुरुष तथा इसके प्रमुख अधिकारी को सर्पमहामात्य कहा जाता था। दो प्रकार की गुप्तचर व्यवस्था थी- 1. संस्था 2. संचरा।

1. **संस्था**- ऐसे गुप्तचर जो संस्थाओं में संगठित होकर कार्य करते थे। संस्था के 5 प्रकार थे-
   (1) कापटिक रूप ये विद्यार्थियों के वेश में रहते थे।
   (2) उदास्थित ये संयासी के वेश में रहते थे।
   (3) गृहपतिक ये किसान के वेश में रहते थे।
   (4) वैदेहक ये व्यापारी के वेश में रहते थे। (5 तापस ये तपस्वियों के वेश में रहते हैं।
2. **संचर**- इसमें भ्रमणशील गुप्तचर होते थे। इसके 4 प्रकार थे 1. संत्री विशेष प्रशिक्षण प्राप्त गुप्तचर 2 तीक्ष्णये शूखीर गुप्तचर थे।
3. **रशद**- ये क्रूर प्रवृति के होते थे।
4. **परिव्राजिका**- ये मिक्षुणी देश में रहती थी। इसमें मुख्य से वेश्याओं की नियुक्ति की जाती थी। कुछ ऐसे भी गुप्तचर होते थे जो अन्य देशों में नौकरी कर लेते थे और सूचनाएँ भेजते थे। ऐसे गुप्तचर को उभयवेतन कहा जाता था।

- गुप्तचर के अतिरिक्त शांति व्यवस्था बनाए रखने तथा अपराधों की रोकथाम के लिए पुलिस भी होती थी जिसे रक्षिन कहा जाता था।

न्याय प्रशासन

- सबसे छोटा न्यायालय ग्राम होता था। इनमें ग्रामीण वृद्धों के साथ मिलकर न्याय करते थे।
- अन्य न्यायालयों में क्रमश: संग्रहण न्यायालय खार्वतिक न्यायालय द्रोणमुख न्यायालय स्थानीय न्यायालय, जनपद न्यायालय एवं केंद्रीय न्यायालय होता था। सबसे उच्च न्यायालय राजा का न्यायालय होता था।
- ग्राम न्यायालय तथा राजा के न्यायालय को छोड़कर अन्य सभी न्यायालय दो प्रकार के थे-1. धर्मस्थीय न्यायालय (दीवानी न्यायालय) इसके न्यायाधीश को धर्मस्थ या व्यवहारिक कहा जाता था। 2. कण्टकशोधन न्यायालय (फौजदारी न्यायालय)। इस न्यायालय के न्यायाधीश को प्रदेष्टा कहा जाता था।

राजस्व प्रशासन

- कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अनुसार राजस्व के सात राजस्व प्रशासन स्त्रोत थे- 1. दुर्ग- नगरों से प्राप्त आय 2 राष्ट्र जनपदों, ग्रामों से प्राप्त आय 3. खनि खानों से प्राप्त आय 4. सेतु - फल-फूल एवं सब्जियों से प्राप्त कर (आय) 5. वन जंगलों से प्राप्त आय 6. ब्रज-पशुओं से प्राप्त आय 7. वणिक पथ स्थल मार्ग एवं जल मार्ग से प्राप्त कर।

भूमि से प्राप्त होने वाली आय

1. सीता राजकीय भूमि पर खेती से प्राप्त होने. वाली आय सीता कहलाती थी
2. भाग स्वतंत्र रूप से खेती करने वाले किसानों से प्राप्त जाय। इसकी मात्र 1/6 से 1/4 थी। जहाँ सरकार सिंचाई की व्यवस्था करती थी वहाँ से 1/3 भाग कर के रूप में लिया जाता था।

मौर्यकालीन विभिन्न प्रकार के कर

- प्रणय- संकट काल में प्रजा द्वारा वसूला जाने वाला कर।
- विष्टि- नि:शुल्क श्रम अथवा बेगार।
- उत्संग- प्रजा द्वारा राजा को दिया जाने वाला उपहार।
- बलि- एक प्रकार का धार्मिक कर।
- हिरण्य- यह कर अनाज के रूप में न लेकर नगद लिया जाता था।
- रज्जु- भूमि की माप के समय लिया जाने वाला कर।
- चोर रज्जु - चोरों को पकड़ने के लिए लिया जानेवाला कर।
- विवीत- चारागाह कर।
- परहीनक- पशुओं द्वारा चरने पर लिया जाने वाला हरजाना।
- शुल्क- आयात कर।
- वर्तनी- सीमा पार करने पर लिया जाने वाला कर।
- पार्श्व- व्यापारी के अधिक लाभ पर वसूला जाने वाला कर।
- अतिवाहिका- मार्ग दर्शन कर
- गुल्मदेय- सैनिकों की फीस।
- आयात कर- वस्तु के मूल्य का 1/5 भाग आयात कर लिया

जाता था। आयातित वस्तु पर पुन: जो बाजार कर लगता था, उसे द्वार देय कहा जाता था। यह प्रवेश्य का 1/5 लिया जाता था।

- साथ ही भोगागम, सेनाभक्त, तरदेय, कोष्ठयक आदि अनेक प्रकार के कर की व्यवस्था थी।

सैन्य प्रशासन

- केंद्रीय व्यवस्था के अंतर्गत एक सैन्य विभाग था, जिसमें कुल 30 सदस्य थे। ये पाँच-पाँच सदस्यों की छ: समितियों में बँटे थे-

  प्रथम समिति- जल सेना की व्यवस्था करती थी। **दूसरी समिति**- सामग्री, यातायात एवं रसद की व्यवस्था करती थी। तीसरी समिति पैदल सैनिकों की देख-रेख करती थी। **चौथी समिति**- अश्वारोहियों के सेना की व्यवस्था करती थी। **पाँचवीं समिति**- गज सेना की व्यवस्था करती थी। **छठी समिति**- रथों के सेना की व्यवस्था करती थी।
- सेनापति युद्ध विभाग का प्रधान अधिकारी होता था। युद्ध क्षेत्र में सेना संचालन करने वाला अधिकारी नायक कहा जाता था।
- पैदल सेना 6 भागों में बँटा था-
  1. मौल- स्थाई सेना
  2. मृतक- आवश्यकता पड़ने पर किराये की सेना।
  3. श्रेणी बल- युद्ध से आजीविका चलाने वाले।
  4. मित्रबल मित्र राष्ट्र की सेना।
  5. अमित्र बल बन्दी बनाये गए सैनिक
  6. आटवी बल वनवासियों की सेना।

मौर्यकालीन मुद्रा

- मौर्यो की राजकीय मुद्रा 'पण' थी वह 3/4 तोले के बराबर चाँदी का सिक्का था।
- मौर्यकालीन सिक्के स्वर्ण, चाँदी ओर ताँबे के बने होते थे।

वेतन

- मंत्री परिषद के सदस्यों को 48000 पण, प्रांतपालों को 12000 पण, अध्यक्षों को 1000 पण, पैदल सैनिकों को 500 पण, रथिक को 200 पण, आरोही को 500 पण वेतन निर्धारित किया गया था। चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में केंद्रीय व्यवस्था स्थापित की गयी थी। चाणक्य ने पूर्व से चली आ रही व्यवस्था में कई परिवर्तन किए जो बाद के राजाओं ने भी उसी शासन प्रबंध को अपनाया।

शुंग वंशीय शासन

पुष्यमित्र शुंग

- मौर्य साम्राज्य का अंतिम शासक वृहद्रथ की हत्याकर उसका सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने शुंग राजवंश की स्थापना की।
- पुष्यमित्र के शासनकाल में पाटलिपुत्र के साथ-साथ विदिशा भी साम्राज्य की राजधानी थी। उसका पुत्र अग्निमित्र विदिशा में कुमारामात्य (राजप्रतिनिधि) था।
- पुराणों के अनुसार उसने दो अश्वमेध यज्ञ किए।
- व्याकरणाचार्य पाणिनी, योगाचार्य पंतजलि उसके शासनकाल में थे। पंतजलि पुष्यमित्र शुंग का सेनापति था जिसने सैनिकों के स्वास्थ्य के लिए योग अनिवार्य कर दिया था।
- पुष्यमित्र अपने आठ पुत्रों के माध्यम से विस्तृत साम्राज्य पर राज करता था।
- गार्गी संहिता एवं कालिदास की मालविकाग्निमित्रम् से पता चलता है कि पुष्यमित्र ने दो बार यवनों को पराजित किया था उसका पौत्र वसुमित्र सेना का प्रतिनिधित्व किया था। यवनों का सेनापति मेनाण्डर था।
- शुंग बौद्ध थे। पुण्य मित्र सहित शुंगवंश में दस राजा हुए, जिन्होंने पाटलिपुत्र में 118 वर्ष राज किया वे इस प्रकार है 1. पुष्यमित्र- 36 वर्ष, 2. अग्रिमित्र- 8 वर्ष, 3. वसुज्यैष्ठ- 7 वर्ष, 4. वसुमित्र- 10 वर्ष, 5. ओद्रक या उदाक- 7 या 2 वर्ष, 6. पुलिन्द- 3 वर्ष, 7. घोष- 3 वर्ष, 8. वज्रमित्र- 7 या 9 वर्ष, 9. भागवत- 32 वर्ष, 10. देवभूति- 10 वर्ष। अभिलेखों और मुद्राओं से प्राय: इन सभी राजाओं का अस्तित्व सिद्ध हुआ है। भागवत का उत्तराधिकारी देवभूति तब नाबालिक था। अत: मगध साम्राज्य की राजशक्ति पूरी तरह मंत्री वासुदेव कन्य के हाथ में चली गई। वासुदेव ने देवभूति की हत्या कर मगध की गद्दी पर अधिकार कर लिया। वासुदेव और उसके तीन उत्तराधिकारियों भूमित्र नारायण और सुशर्मा ने मगध में राज किया। वायुपुराण के अनुसार कण्व वंश के अंतिम शासक सुशर्मा की हत्या आंध्रवासी सिन्धुक द्वारा कर दी गयी थी।

सातवाहनवंशीय शासन

- सिमुक ने सातवाहन राज्य की स्थापना की, जो आंध्रवासी था। नानाघाट लेख में उसे राजा सिमुक सातवाहन कहा गया है। उसने बौद्ध एवं जैन मंदिरों का निर्माण करवाया था।
- सिमुक का अभ्युदय तीसरी शताब्दी ई.पू. में हुआ था किन्तु अधिकांश विद्वानों ने सातवाहन वंश का उदयकाल प्रथम शताब्दी ई.पू. स्वीकार किया है। कृष्ण, सिमुक का छोटा भाई था। शातकर्णि प्रथम उसका पुत्र था।
- पुराणों में इस वंश को आंध्रजातीय व आंध्र भृत्य कहा गया है। किन्तु इस वंश के लेखों में आघ्रजातिय तथा आंध्रभृत्य शब्द का प्रयोग नहीं मिलता है।
- साँची के महास्तूप के दक्षिण तोरण पर शातकर्णि नाम अंकित है उसकी माता गौतमी बलश्री के नासिक गुहालेख में उसकी विजयों का वर्णन प्राप्त होता है। उसने शकनरेश 'नहपान' को पराजित कर शकों से उसके साम्राज्य के महत्वपूर्ण भाग छीन लिए थे।
- सातवाहन वंश में सिन्धुक, कृष्ण, शाकर्णि पुलमावि, यक्षश्री और शतकर्णि राजा हुए थे। सिन्धुक द्वारा स्थापित सातवाहन साम्राज्य शातकर्णि प्रथम के काल तक आते-आते चरमरा गया। शातकर्णि प्रथम के बाद इस वंश का इतिहास अंधकार

से आच्छादित हो गया।

कुषाण वंशीय शासन

कनिष्क

- कनिष्क की राज्यारोहण की तिथि विवादित है। अभिलेखों में उसे महाराज राजाधिराज देवपुत्र कहा गया है।
- कनिष्क बौद्ध था। उसने अपनी राजधानी पुरुषपुर (पेशावर) में बौद्ध स्तूप बनवाकर बौद्ध धर्म के प्रति निष्ठा प्रकट की थी। कनिष्क के पूर्वज भी बौद्ध थे। उन्होंने ही बौद्ध धर्म का संदेश चीन भेजा था।
- कनिष्क ने पाटलिपुत्र पर आक्रमण कर उसके सातवाहन नरेश को पराभूत किया था।
- पाटलिपुत्र के राजा ने पराजित होने पर कनिष्क को गौतम बुद्ध के एक भिक्षापात्र, प्रख्यात महाकवि अश्वघोष तथा एक चमत्कारिक मुर्गा उपहार स्वरूप प्रदान किया था।
- कनिष्क ने महाक्षत्रप और उसके नीचे प्रत्येक जनपद में क्षत्रप नियुक्त किए। पाटलिपुत्र विजय के बाद कनिष्क ने खरपल्लान को महाक्षत्रप नियुक्त किया था।
- अश्वघोष, पार्श्व, चरक, संघरक्ष, माठर, नागार्जुन, वसुमित्र, ध र्मत्रात, घोषक, बुद्धदेव आदि विद्वान कनिष्ककालीन थे ।
- कनिष्क (प्रथम) के काल में चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन कश्मीर के कुण्डलवन नामक बौद्ध विहार में वसुमित्र की अध्यक्षता में हुआ था। इस बौद्ध संगीति में महायान बौद्ध की व्याख्या की गयी। थी। इस संगीति के पश्चात महायान सम्प्रदाय का उदय हुआ। इसके पश्चात महायान सम्प्रदाय की लोकप्रियता उत्तरोत्तर बढ़ने लगी।
- कनिष्क (प्रथम) और उसके उत्तराधिकारियों के लेखों में कुछ तिथियाँ अंकित हैं. यथा कनिष्क (प्रथम) 1- 23 वर्ष, कनिष्क (द्वितीय) 24-28 वर्ष, हुविष्क 28-60 वर्ष तथा वासुदेव 67-98 वर्ष। तिथिक्रम से भी स्पष्ट है कि उसके उतराधिकारियों ने उसी संवत का प्रयोग किया था।
- कनिष्क के राज्यारोहण की तिथि 78 ई से शक संवत का प्रारंभ माना जाता है।

गुप्त वंशीय शासन

श्रीगुप्त (240- 280 ई.)

- श्रीगुप्त इस गुप्त वंश के प्राथमिक नरेश था। उन्होंने 'महाराज' की उपाधि धारण की थी। वह अपने सामंतों को भी 'महाराजा' की उपाधि प्रदान करता था। डा. के. पी. जायसवाल का अभिमत है कि उसका नाम 'गुप्त' ही रहा होगा। श्री शब्द सम्मान के लिए लगाया गया होगा।
- चीनी बौद्ध यात्री इत्सिंग के वर्णन से ज्ञात होता है कि मगध के मृगशिखावन में एक बौद्ध मंदिर का निर्माण करवाया था तथा मंदिर प्रबंधन के लिए उसने 24 गांव प्रदान किये थे।
- इतिहासकार के. पी. जायसवाल का मत है कि श्रीगुप्त स्वतंत्र शासक नहीं था बल्कि भारशियों (नागवंश) के अधीन छोटे से राज प्रयाग का शासक था।
- पुराणों में इस वंश के शासकों को 'गुप्त वंशजा' कहा गया है।

घटोत्कच गुप्त (280-320 ई.)

- श्रीगुप्त के निधन के पश्चात उसका पुत्र घटोत्कच पाटलिपुत्र का शासक हुआ।
- ऐलन के अनुसार घटोत्कच का राज पाटलिपुत्र तथा उसके निकट के क्षेत्र थे।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय की पुत्री प्रभावती गुप्त के रिद्धपुर ताम्रपत्र अभिलेख में घटोत्कच गुप्त को गुप्त वंश का प्रथम राजा बताया गया है तथा प्रवरसेन द्वितीय के रिद्धपुर लेख में 'गुप्तनामादिराजों' कहा गया है। इसने भी 'महाराजा' की उपाधि धारण की थी।
- घटोत्कच के काल में गुप्तों ने गंगाघाटी में राजनीतिक महता प्राप्त की थी।
- घटोत्कच का कोई स्वतंत्र लेख प्राप्त नहीं होता है अत: उसके राज्यकाल की प्रमुख घटनाओं पर कोई प्रकाश नहीं पढ़ पाता है।

चन्द्रगुप्त प्रथम (320- 335 ई.)

- चन्द्रगुप्त प्रथम गुप्तवंश का तीसरा शासक था। गुप्त नरेशों में सर्वप्रथम 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण कर उसने उत्तरी भारत में विशेष ख्याति अर्जित की थी।
- चन्द्रगुप्त प्रथम ने लिच्छवि राजकन्या कुमारदेवी के साथ अपने विवाह द्वारा द्वितीय मगध साम्राज्य की स्थापना की थी। इस विवाह के कारण चन्द्रगुप्त प्रथम को लिच्छवियों का वैशाली का राज्य दहेज रूप में प्राप्त हुआ था।
- चन्द्रगुप्त प्रथम ने अपने राज्यारोहण (319-20 ई.) का सूत्रपात गुप्त संवत् प्रवर्तन कर किया था। गुप्त अभिलेखों में गुप्त संवत् प्राप्त हुए हैं। अलबरूनी के अनुसार गुप्त संवत् शक संवत के 241 वर्ष उपरान्त प्रारंभ होता है।

समुद्रगुप्त पराक्रमांक (335-375 ई.)

- चन्द्रगुप्त प्रथम के बाद उसका पुत्र समुद्रगुप्त राजसिंहासन पर आसीन हुआ। प्रयाग प्रशस्ति के अनुसार चन्द्रगुप्त प्रथम ने अपने शासन काल में ही उसको अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया था।
- हरिषेण समुद्रगुप्त का मंत्री तथा दरबारी कवि था। हरिषेण द्वारा रचित प्रयाग प्रशस्ति से समुद्रगुप्त के राज्यारोहण, विजय, साम्राज्य विस्तार के संबंध में जानकारी प्राप्त होती है।
- उसके राजपत्रों पर गरूड़ का राजचिह्न अंकित रहता था। उसने अश्वमेध यज्ञ किया था। उसने 6 प्रकार की स्वर्ण मुद्राएँ (गरुड़, धनुर्धर, परशु, अश्वमेध व्याग्रहन्ता एवं वीणासरण) जारी किया था।
- समुद्रगुप्त अपने को 'लिच्छिव दौहित्र' कहलावाने में गर्व

करता था। उसने बौद्ध विद्वान वसुबंधु को संरक्षण दिया था और सिंहल (श्रीलंका) के राजा मेघवर्मन को बोध गया में एक बौद्ध विहार बनाने की अनुमति दी थी।

- प्रयाग प्रशस्ति 'धरणि बन्ध' के अनुसार वह सम्पूर्ण पृथ्वी को एक सूत्र में बाँधना चाहता था। सिंहासनारोहण होते ही उसने अपना विजय अभियान प्रारंभ किया। उसका साम्राज्य उत्तर में हिमालय की तलहटी से दक्षिण में नर्मदा नदी तक और पूर्व में हुगली से पश्चिम में यमुना तथा चम्बल तक स्थापित था।

रामगुप्त (375-380 ई.)

- समुद्रगुप्त के बाद अल्पकाल के लिए रामगुप्त राजसिंहासन पर आरूढ़ हुआ था।
- स्रोतों के अनुसार रामगुप्त कायर था। शक् नरेश ने उस पर आक्रमण कर दिया और उसकी पत्नी ध्रुवदेवी को प्राप्त करने के लिए दबाव डालने लगा। उसने इसके लिए अपनी सहमति भी शक राजा को दे दी परंतु उसका अनुज चन्द्रगुप्त द्वितीय को यह संधि अपमानजनक लगी। उसने स्त्रीवेश धरकर शक नरेश को मार डाला, बाद में रामगुप्त को भी मारकर ध्रुवदेवी के साथ विवाह कर लिया। इस बात का उल्लेख काव्यमीमांसा, हर्षचरित, श्रृंगार प्रकाश, मजमलुत-तवारीख, संजन ताम्रपत्र, संगली, काम्बेत था दुर्जनपुर लेख राजावली आदि में हुआ है। रामगुप्त को जैन कहा गया है।

चन्द्रगुप्त द्वितीय 380-412 ई.)

- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपने भाई रामगुप्त की हत्या कर सिंहासन पर आसीन हुआ। वह समुद्रगुप्त तथा प्रधानरानी दत्तदेवी का पुत्र था।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय का मथुरा लेख संवत् 61 का है, इससे ज्ञात होता है कि वह (31961) 380 ई. में शासन कर रहा था। यह अभिलेख उसने अपने शासनकाल के पांचवे वर्ष में उत्कीर्ण कराया था। इससे स्पष्ट होता है कि उसका राज्याभिषेक गुप्त संवत् 56 (375 ई.) को हुआ होगा।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय की उपाधियों में नरेन्द्र-चन्द्र, सिंह-चन्द्र, नरेन्द्रसिंह, सिंहविक्रम, विक्रम, विक्रमांक, विक्रमादित्य, रूपाकृति तथा साहसांक उल्लेखनीय है।
- उसने शक नरेश रूद्रसिंह तृतीय को पराजित किया और उनके साम्राज्य को अपने अधीन कर लिया था। इसलिए उसे 'शकारि' (शकों का शत्रु) कहा जाता था। शकों पर विजय होने पर उसने मुद्रा का चलन करवाया और विक्रमादित्य की उपाधि धारण की।
- उसके राज्यकाल में चीनी बौद्ध यात्री फाह्यान भारत पहुंचा था। उसने तत्कालीन दशा पर विस्तृत वृतान्त लिखे हैं। उसके शासन व्यवस्था की प्रचुर प्रशंसा की है।
- चन्द्रगुप्त की रानियों में कुबेर नागा और ध्रुवदेवी थी। उसके दो पुत्र- कुमारगुप्त प्रथम और गोविन्द गुप्त थे। गोविन्दगुप्त वैशाली में उसका प्रतिनिधि शासक था। एक पुत्री प्रभावती गुप्त थी, जो नागवंशी रानी कुबेरनागा से उत्पन्न हुई थी प्रभावती गुप्त का विवाह वाकाटक के युवराज रूद्रसेन द्वितीय से हुआ था।
- चन्द्रगुप्त के दरबार के नौरत्नों में कालिदास, आर्यभट्ट, वाराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त, धन्वतरी आदि प्रमुख थे।
- मेहरौली अभिलेख के अनुसार उसके (चन्द्रगुप्त द्वितीय) दिवंगत हो जाने के बाद भी उसके पराक्रम से दक्षिणी समुद्र तक आज भी सुवासित हो रहा है।

कुमार गुप्त महेन्द्रादित्य (412-455 ई.)

- चन्द्रगुप्त द्वितीय के उपरान्त कुमारगुप्त प्रथम राजसिंहासन का उत्तराधिकारी हुआ जो उसकी दूसरी रानी ध्रुवदेवी का ज्येष्ठ पुत्र था।
- कुमार गुप्त का साम्राज्य उसके पिता की भाँति गुजरात से लेकर बंगाल तक फैला हुआ था।
- कुमारगुप्त प्रथम का काल शांति एवं सुव्यवस्था का काल था। उसने समुद्रगुप्त और चन्द्रगुप्त द्वितीय द्वारा उत्तराधिकार में प्राप्त साम्राज्य को पूर्णतः सुरक्षित रखा।
- भीतरी स्तम्भ-लेख से विदित होता है कि कुमारगुप्त प्रथम के जीवन के अंतिम वर्ष पुष्यमित्रों के आक्रमण से आक्रान्त हो गए थे। इसलिए उसने युवराज स्कन्दगुप्त को पुष्यमित्रों को पराजित करने के लिए भेजा।
- उसने बुद्ध और पार्श्व की मूर्तियों की स्थापना की थी। यह बौद्ध था। उसने नालंदा महाविहार (विश्वविद्यालय) की स्थापना की थी।

स्कन्दगुप्त (455-467 ई.)

- कुमार गुप्त प्रथम के पश्चात स्कन्दगुप्त सिंहासनारूढ़ हुआ। उसका प्रारम्भिक वर्ष पुष्यमित्रो तथा हुणों के साथ संघर्ष में बीता।
- स्कन्दगुप्त विजेता होने के साथ ही कुशल प्रशासक एवं साम्राज्य निर्माता भी था। उसका साम्राज्य कई भागों में बंटा था जिसे मुक्ति (प्रांत) कहा जाता था। यह बौद्ध था। नालंदा विश्वविद्यालय का संरक्षक भी था।

पुरुगुप्त (467-68 ई.)

- स्कन्दगुप्त के पश्चात उसका भ्राता पुरुगुप्त सिंहासनासीन हुआ। भीतरी राज मुद्रा से ज्ञात होता है कि कुमारगुप्त प्रथम उसका पिता तथा अनंतदेवी उसकी माता थी। वह बौद्ध था। उसने 'प्रकाशादित्य' की उपाधि धारण की थी।

स्कन्दगुप्त के पश्चात् ही गुप्त साम्राज्य पतनोन्मुख हो गया। पुरूगुप्त के बाद नरसिंह गुप्त, बालादित्यगुप्त, कुमारगुप्त द्वितीय, बुद्धगुप्त, भानु गुप्त, हर्ष गुप्त, दामोदर गुणा, महादेव गुप्त आदि गुप्तवंशीय शासक हुए। गुप्त काल में सभ्यता एवं संस्कृति के विविध आयामों में अभूतपूर्व उन्नति हुई थी। इसी कारण गुप्त काल को स्वर्ण युग की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। कुमारगुप्त प्रथम द्वारा संस्थापित नालंदा विश्वविद्यालय

का संरक्षण एवं विकास बाद के गुप्तवंशीय शासक करते रहे थे।

मौखरी वंशीय शासन

- गुप्त काल की समाप्ति के बाद मौखरी वंश का शासन स्थापित हुआ। इसका संस्थापक मुखर था।
- मौखरी वंश का उत्तराधिकारी शार्दूल वर्मन हुआ था। उसका उत्तराधिकारी अनंत वर्मन हुआ।
- इतिहासकारों का मत है कि मौखरी गुप्त शासकों के अधीन सामंत थे। गुप्त वंशीय शासन व्यवस्था दामोदर गुप्त, महादेव गुप्त आदि के काल पतनोन्मुख अवस्था में पहुँच गया था। संभवत: उस समय अनंत वर्मन ने स्थिति का लाभ लिया होगा। नालंदा से प्राप्त अभिलेख में अर्वंतिवर्मन को महाराजाधिराज कहा गया है।
- सुचंद्र वर्मन ने मगध में स्वतंत्र राज स्थापित किया। नालंदा अभिलेख में सुचंद्र वर्मन को अर्वंति वर्मन का उत्तराधिकारी तथा महाराजाधिराज कहा गया है।
- अन्य मौखरी शासकों की जानकारी तो मिलती है परंतु इन शासकों के विषय में ऐतिहासिक सामग्री का काफी अभाव है।
- हर्षवर्द्धन के शासन काल में साम्राज्य का काफी विस्तार हुआ। उसके अभिलेखों से पता चलता है कि राज्य प्राप्ति के बाद छ: वर्ष तक उसने सेना की वर्दी पहने रही।
- शशांक संभवत: हर्ष के प्रतिनिधि के रूप में सामन्त रहा होगा। उसका केन्द्र रोहतास के समीप वारूणिका (देबबर्नाक) में रहा प्रतीत होता है। वहाँ की चट्टानों पर उसकी मुद्रा ढालने का साँचा बना है जिसमें 'श्री महासामन्त शशांक देव' का अभिलेख है।
- शशांक के बाद संभवत: सारा बिहार हर्ष के अधिकार में चला गया। सिंहनाद हर्ष का महासेनापति था तथा मंडी प्रधानमंत्री।
- ह्वेनसांग के अनुसार शशांक ने बौद्धों पर बड़े अत्याचार किए। बोधिवृक्ष उसने कटवा दिया और पटना स्थित बौद्ध चिन्हों को गंगा में फेंकवाने का प्रयास किया था।
- हर्ष ने माधवगुप्त को शासक नियुक्त किया था। माधवगुप्त के बाद आदित्यसेन राजा हुआ। आदित्यसेन और देवगुप्त के समय नालंदा महाविहार और अन्य विहार उन्नत अवस्था में थी।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. मंगल राजवंश का प्रतापी राजा बृहद्रथ का उल्लेख है-
   (a) महाभारत (b) पुराण
   (c) बौद्धग्रंथ (d) उपर्युक्त सभी ने
2. मगध सम्राट जरासा का उल्लेख हुआ है-
   (a) भागवत पुराग (b) महाभारत
   (c) बौद्ध ग्रन्थ (d) उपर्युक्त सभी में
3. मगध सम्राट बिम्बिसार कितने हजार गाँव (जनपद) का अधिपति था?
   (a) 70 (b) 75
   (b) 80 (d) 85
4. मगध सम्राट बिम्बिसार कुल उपज का कितना भाग भूमि कर लेता था ?
   (a) 1/3 (b) 1/4
   (c) 1/5 (d) 1/6
5. मगध सम्राट बिम्बिसार को 'सेणिय' क्यों कहा जाता था?
   (a) स्थायी सेना बना रखी थी।
   (b) उसके पास अस्थाई सेना थी।
   (c) स्वयं सेनापति था।
   (d) वह सैन्य व्यवस्था खत्म कर दी थी।
6. गौतम बुद्ध मगध के किस राजा के शासनकाल में बुद्धत्व की प्राप्ति की थी?
   (a) बिम्बिसार (b) अजातशत्रु
   (c) जरासंघ (d) वृहद्रथ
7. मगध सम्राट अजातशत्रु की राज विस्तार नीति का उल्लेख किस जैन ग्रंथ में हुआ है?
   (a) निरयावलि सूत्र (b) राजावली कथा
   (c) आवश्यकचूर्णी (d) औमालिक सूत्र
8. मगध सम्राट अजातशत्रु के शासनकाल में मगध और वैशाली के बीच कितने वर्षो तक युद्ध चला था?
   (a) 14 (b) 15
   (c) 16 (d) 17
9. मगध सम्राट अजातशत्रु के शासन काल में प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन राजगृह में कब हुआ था?
   (a) 481 ई.पू. (b) 482 ई. पू.
   (c) 483 ई. पू. (d) 484 ई. पू.
10. किस मगध सम्राट ने पाटलिपुत्र नगर बसाया था?
    (a) बिम्बिसार (b) अजातशत्रु
    (c) उदायित (d) जरासंघ
11. हर्यक वंश का अंतिम मगध सम्राट कौन था?
    (a) उदायिग (b) नागदाशक
    (c) शैशुनाग (d) कालाशोल
12. किस मगध सम्राट ने वैशाली को वास्तविक राजधानी बनायी?
    (a) शिशुनान (b) नागदासक
    (c) कालाशोक (d) अजातशत्रु
13. किसके शासन काल में द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन वैशाली में हुआ था?
    (a) अजातशत्रु (b) शिशुनाग
    (c) कालाशोक (b) उदाविन
14. किस मगध सम्राट को बौद्ध ग्रंथों में उग्रसेन अर्थात प्रचण्ड सेना

का स्वामी कहा गया है?
(a) कालाशोक (b) उदायिन
(c) अजातशत्रु (d) महापद्मनंद

15. किस मगध सम्राट ने अपने दरबार में चाणक्य को अपमानित किया था?
(a) घनानंद (b) महापद्मनंद
(c) कालाशोक (d) शिशुनाग

16. मगध सम्राट धननंद पर चन्द्रगुप्त की विजयगाथा का वर्णन नाटककार विशाखादत के किस नाट्य पुस्तक में हुआ है?
(a) चाणक्य (b) मुद्रारक्षण
(c) मृच्छकटिक (d) शुक

17. किस मगध सम्राट ने व्याकरणाचार्य पाणिनी को पुरुषपुर (पेशावर) से पाटलिपुत्र आमंत्रित किया था?
(a) घननंद (b) महापद्मनंद
(c) अजातशत्रु (d) उदायिन

18. किस सम्राट ने भारत में सर्वप्रथम केंद्रीकृत व्यवस्था स्थापित किया था?
(a) चन्द्रगुप्त मौर्य (b) अजातशत्रु
(c) बिम्बिसार (d) जरासंघ

19. मौर्यकालीन शासन व्यवस्था कितने प्रांतीय भागों में विभक्त था?
(a) 3 (b) 4
(c) 5 (d) 6

20. वह ग्रंथ जिसमें पाटलिपुत्र प्रशासन का वर्णन उपलब्ध है-
(a) अर्थशास्त्र (b) इण्डिका
(c) राजतरंगिनी (d) पुराण

21. मौर्यकालीन राजा व्यवस्था के किस अंग का प्रमुख होता था?
(a) कार्यकारिका (b) व्यस्थापिका
(c) न्यायपालिका (d) उपरोक्त सभी का

22. मौर्यकालीन नगर प्रशासन में कितनी समितियों का सहयोग रहता था?
(a) 4 (b) 5
(c) 6 (d) 7

23. मौर्यकालीन मंत्री परिषद में कितने मंत्री होते थे?
(a) 8 से 10 (b) 9 से 11
(c) 10 से 11 (d) 12 से 20

24. मौर्यकालीन केन्द्रीय शासन संचालन के लिए कई विभागों बनाए गए थे उन विभागों को क्या कहा जाता था?
(a) व्यवहारिक (b) विभाग
(c) तीर्थ (d) स्थानिक

25. कौटिल्य के अर्थशास्त्र में कितने तीर्थों (विभागों) का उल्लेख है?
(a) 15 (b) 16
(c) 17 (d) 18

26. मौर्यकालीन गुप्तचर व्यवस्था कितने भागों में विभक्त थी?
(a) 2 (b) 3
(c) 4 (d) 5

27. मौर्यकालीन राजस्व के कितने स्त्रोत थे?
(a) 5 (b) 6
(c) 7 (d) 8

28. मौर्यकालीन मुद्रा क्या कहलाती थी?
(a) पण (b) रुपया
(c) चन्द्र (d) मयूर

29. अर्थशास्त्र में 'सीता' भूमि की व्याख्या इस प्रकार है–
(a) भूमि पर खेती से प्राप्त होने वाली आय ।
(b) प्रजा द्वारा राजा को दिया जाने वाला कर।
(c) एक प्रकार का धार्मिक कर।
(d) चारगाह कर।

30. मौर्य सम्राट विन्दुसार के राजदरबार में यूनानी शासन एन्टीयोकस प्रथम ने किसे राजदूत बनाकर भेजा था?
(a) प्लूटार्क (b) डियानीसियस
(c) सेल्यूकस (d) मेगस्थनीज

31. ग्रीक शासक सेल्यूकस को किसने पराजित किया था?
(a) दिम्बिसार (b) अजातशत्रु
(c) चन्द्रगुप्त मौर्य (d) बिन्दुसार

32. नागार्जुनी पहाड़ी गुफाओं में किसने आजीवकों के लिए गुफाओं का निर्माण करवाया था?
(a) अशोक-दशरथ (b) दशरथ-बिन्दुसार
(c) बिन्दुसार-शत्धनुष (d) देववर्मन-दशरथ

33. किस मगध सम्राट ने 'गुप्त संवत्' का प्रवर्तन किया था?
(a) चन्द्रगुप्त मौर्य (b) चन्द्रगुप्त प्रथम
(c) कुमार गुप्त (d) रामगुप्त

34. किस मगध सम्राट के शासनकाल में चीनी बौद्धयात्री फाह्यान भारत पहुंचा था?
(a) चन्द्रगुप्त प्रथम (b) चन्द्रगुप्त द्वितीय
(c) कुमार गुप्त (d) श्रीगुप्त

35. चन्द्रगुप्त प्रथम का राज्याभिषेक कहाँ हुआ था?
(a) काशी (b) कलौज
(c) पाटलिपुत्र (d) वैशाली

36. गुप्तवंश की स्थापना का वर्ष था-
(a) 230 ई. (b) 320 ई.
(c) 125 ई. (d) 330 ई.

37. बिहार में गुप्त शक्ति के संगठन का श्रेय किसे दिया जाता है?
(a) चन्द्रगुप्त प्रथम (b) चन्द्रगुप्त द्वितीय
(c) समुद्रगुप्त (d) कुमार गुप्त

38. किस शासक से सिंहल (श्रीलंका) के राजा मेघवर्मन ने बोध

गया में बौद्ध मठ स्थापित करने की अनुमति मांगी थी?
(a) चन्द्रगुप्त प्रथम (b) अशोक
(c) समुद्रगुप्त (d) कुमार गुप्त

39. नालंदा विश्वविद्यालय के स्थापना का युग है-
(a) मौर्य (b) कुण
(c) गुप्त (d) पाल

40. नालंदा विश्वविद्यालय का संस्थापक था-
(a) चन्द्रगुप्त प्रथम (b) रामगुरा
(c) गुप्त (d) कुमारगुप्त

41. बोध गया के महाबोधी मंदिर की स्थापना हुई-
(a) मौर्यकाल में (b) पालकाल में
(c) गुप्तकाल में (d) मौखरीकाल में

42. चीनी बौद्ध यात्री फाहियान कितने समय तक पाटलिपुत्र में रहा था?
(a) 6 महीने (b) एक वर्ष
(c) 2 वर्ष (d) 3 वर्ष

43. खगोलशास्त्री आर्यभट्ट का संबंध बिहार के किस नगर से था?
(a) नालंदा (b) चम्पा
(c) पाटलिपुत्र (d) राजगृह

44. किसने यह वर्णन किया है कि– ''मध्य भारत के सभी देशों में मगध देश में सर्वाधिक नगर थे। धनपतियों ने यहाँ चिकित्सालय बनवाये थे, जहाँ रोगियों को नि:शुल्क भोजन तथा दवाएँ दी जाती थी।''
(a) इत्सिंग (b) ह्वेनसांग
(c) फाहियान (d) मेगास्थनीज

45. चीनी बौद्ध तीर्थ यात्री छैनसाग ने बिहार के किस विश्वविद्यालय में अध्ययन किया था?
(a) उदंतपुरी (b) विक्रमशिला
(c) नालंदा (d) श्वेतपुर

46. चीनी बौद्ध तीर्थयात्री इत्सिंग बिहार के किस विश्वविद्यालय में दस वर्षों तक अध्ययन किया था?
(a) नालंदा (b) विक्रमशिला
(c) चेचर (d) उदंतपुरी

47. महाबोधी वृक्ष को क्षति पहुँचाने वाला शासक था-
(a) ग्रहवर्मन (b) हर्षवर्द्धन
(c) शशांक (d) राज्यवर्द्धन

48. गुप्तवंशी शासक किस धर्म को मानने वाले थे-
(a) जैन (b) बैद्ध
(c) वैष्णव (d) शैव

49. मगध के किस परवर्ती गुप्तवंश का अंतिम शासक था-
(a) जीवित गुप्त (b) माधव गुप्त
(c) कुमार गुप्त (d) पुरुगुप्त

50. गुप्तकाल की समाप्ति के बाद किस वंश का शासन मगध में स्थापित हुआ?
(a) हर्यक वंश (b) मौर्यवंश
(c) हैहैयवंश (d) मौखरीवंश

ANSWER SHEET

1. D	2. D	3. C	4. D	5. A	6. A
7. A	8. C	9. C	10. C	11. B	12. A
13. C	14. D	15. A	16. B	17. B	18. A
19. C	20. B	21. D	22. C	23. D	24. C
25. D	26. A	27. C	28. A	29. A	30. D
31. C	31. A	32. B	33. B	34. C	35. C
36. B	37. B	38. C	39. C	40. D	41. C
42. D	43. C	44. C	45. C	46. A	47. C
48. B	49. A	50. D			

ꙮ❖ꙮ

KHAN GLOBAL STUDIES
KGS Campus, Sai Mandir, Musallahpur Hatt, Patna - 6
Mob : 8877918018, 875735880

History

By : Prateek Sir

जैन धर्म और बिहार

'जैन धर्म' दर्शन पर आधारित विश्व का प्राचीनतम शास्त्रीय धर्म है। इस धर्म का संबंध बिहार से प्रारंभिक काल से ही रही है। जैन धर्म आरंभिक काल से ही बिहार के केन्द्रीय भूमिका में रही थी। बिहार से ही जैन धर्म का विस्तार हुआ था। जैन धर्म में 24 तीर्थंकर हुए हैं, उन सभी का संबंध बिहार से रही थी। 10वें तीर्थंकर शीतलनाथ, 12वें तीर्थंकर वसुपूज्य तथा 24वें तीर्थंकर महावीर का जन्म बिहार में ही हुआ था। तात्कालीन जैन तीर्थंकरों, मुनियों, उपाध्यायों, आचार्यों आदि का प्रभाव तात्कालीन बिहार की जनता पर पड़ी थी। प्राचीनकालीन जैन मूर्तियाँ बिहार के विभिन्न क्षेत्रों में बिखरी पड़ी हैं, जो तात्कालीन जैन धर्म के प्रभाव की ओर संकेत कराती है। आज से 2 हजार 5 सौ वर्ष पूर्व (पूर्व बौद्धकाल) जैन धर्म बिहार में जनप्रिय एवं बहुसंख्यकों का धर्म हुआ करता था। प्रथम जैन-संगीति का आयोजन 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व पाटलीपुत्र (पटना) में चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में हुआ था, जिसकी अध्यक्षता स्थूलभद्र ने की थी। जैन धर्म-दर्शन तथा परंपरा को ई. पू. 5वीं शताब्दी में लिखित रूप बिहार में ही प्रदान किया गया था।

जैन धर्म

- 'जैन', 'जिन' तत्व या शब्द से बनी है, जिसका शाब्दिक अर्थ है- जिसमें मनोवेगों एवं इंद्रियों को सम्पूर्णता के साथ अपने वश में कर लिया है; राग- द्वेषादि को जीतने वाला।
- जैनियों का मानना है कि उनकी धार्मिक व्यवस्था क्रमशः होने वाले 24 तीर्थंकरों के उपदेशों से युक्त है।
- जैन तीर्थंकरों के अनुसार पदार्थ क्षयशील है किन्तु आत्मा शाश्वत एवं विकासमान है। उनके अनुसार जीव (आत्मा) तृष्णाजनित बंधन में कैद रहती है। सतत् प्रयासों द्वारा ही जीव (आत्मा) को तृष्णा जनित बंधन से मुक्त किया जा सकता है। कार्मिक शक्तियों के छिन्न-भिन्न होने से ही जीव (आत्मा) की अंतिम मुक्ति होती है और उसमें आत्मिक तत्व के सद्गुण प्रकट होते हैं। जैन धर्म में मुक्ति जीवन का अंतिम लक्ष्य है। कर्मफल का नाश तथा जीव (आत्मा) से भौतिक तत्वों से हटा देने से मुक्ति संभव है।

बिहार में जैन धर्म का विस्तार

- जैन धर्म विश्व का प्राचीनतम शास्त्रीय धर्म है जो दर्शन पर आधारित है। इस धर्म का संबंध बिहार से प्रारंभिक काल से ही रही थी। बिहार से ही जैन धर्म विस्तार पाया था।
- आज से 2 हजार 7 सौ वर्ष पूर्व (पूर्व बौद्धकाल) जैन धर्म बिहार में जनप्रिय धर्म हुआ करता था। तात्कालीन गणराज्यों मगध, अंग, विदेह, वैशाली में जैन धर्म राजकीय धर्म था। जैन धर्म से संबंधित प्राचीनकालीन अवशेष बिहार के विभिन्न क्षेत्रों में बिखरी पड़ी है, जो तात्कालीन जैन प्रभाव की ओर संकेत कराती है।
- जैन धर्म में 24 तीर्थंकर हुए हैं। उन सभी का संबंध बिहार से रही थी। इसलिए जैन धर्मावलम्बियों के बीच बिहार प्राचीनकाल से ही केंद्रीय भूमिका में रही है। मगध, अंग, विदेह, वैशाली में अनेक जागृत चौत्यालय थे, जहाँ लोग विहार करने तथा ज्ञान केन्द्रों (जैन विद्यालयों) में श्रावक जैन दर्शन की शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते थे।
- ऋषभदेव (पहले तीर्थंकर) और नेमिनाथ (21वें तीर्थंकर) को छोड़कर शेष बाईस तीर्थंकर बिहार में निर्वाण प्राप्त किए थे। इन बाइसों में 20 तीर्थंकरों ने सम्मेद शिखर (पारसनाथ पहाड़ पर निर्वाण प्राप्त किए थे। महावीर पावापुरी में तथा वसुपूज्य चम्पापुरी (भागलपुर) में निर्वाण प्राप्त किया था।
- सम्मेद शिखर (पारसनाथ पहाड़) को प्राचीनकाल में समाधि गिरि, समिदगिरि, मल्ल पर्वत भी कहा जाता था। (जैन ग्रंथ- आवश्यक निर्युक्ति)
- जैन धर्म के 24 तीर्थंकर 1. ऋषभदेव, 2. अजित, 3. संभव, 4. अभिनंदन, 5. सुमति, 6. पद्मप्रभा, 7. संपार्श्व, 8. चंद्रप्रभा, 9. सुविधि, 10. शीतल, 11. श्रेयंश, 12. वसुपूज्य, 13. विमल, 14. अनंत, 15. धर्म, 16. शांति, 17. कुंथु, 18. अर, 19. मल्लि, 20. सुव्रत, 21. नेमि, 22. अरिष्टनेमी, 23. पार्श्व, 24. महावीर।
- मान्यता है कि 10वें तीर्थंकर शीतलनाथ का जन्म बिहार में हुआ था। उनका चरणचिन्ह चतरा जिले (अब झारखंड) के इटखोरी प्रखंड से 35 किमी. दूर भद्रकाली मंदिर से 450 फीट की दूरी पर एक पत्थर के टुकड़े पर अंकित है।
- 19वें तीर्थंकर मल्लिनाथ तथा 21वें तीर्थंकर नेमिनाथ की जन्मभूमि मिथिला थी। 12वें तीर्थंकर वसुपूज्य का जन्म चम्पापुरी (भागलपुर के निकट) में हुआ था।
- 20वें तीर्थंकर सुव्रतनाथ का जन्म राजगृह में हुआ था।
- जैन मुनि स्थूलभद्र की पवित्र समाधि गुलजारबाग, पटना (महात्मा गाँधी सेतु के निकट) में है। प्रथम जैन-संगीति का आयोजन पाटलिपुत्र में चंद्रगुप्त मौर्य के शासनकाल (322-298

ई.पू.) में हुई थी, जिसकी अध्यक्षता स्थूलभद्र ने की थी।

- जैनों की चौदह मूल ग्रंथी, जो पूर्वी के नाम से जानी जाती थी परन्तु वे सभी खो चुकी थी। पूर्वी वे का ज्ञान प्राप्त करने के लिए पाटलिपुत्र में प्रथम जैन-संगीति का आयोजन किया गया था। चंद्रगुप्त मौर्य की संरक्षण एवं स्थूलभद की अध्यक्षता में 14 पूर्वो के स्थान पर 12 अंगों की रचना हो सकी। पाटलिपुत्र में इसे लिखित रूप दिया गया। वे 12 नये खण्डों (अंगों) में संकलित किया गया 1. आचारांग 2. सूत्रक्रुदंग 3. स्नांक 4. समवायांग 5. वाक्याप्रेनाप्ति 6. धर्मकथांग 7. उपासक अध्ययनांग 8. अन्ताक्रुरूदशांग 9. अनुत्तर पदकांग 10. प्रश्न व्याकरण 11. विपाकसूत्रांक 12. दृष्टिवादांग इसे 'पाटलिपुत्र वाचना' के नाम से जाना गया। (जैन ग्रंथ आवश्यकचूर्णी)
- चंद्रगुप्त मौर्य के अभिलेखों से पता चलता है कि मौर्यकालीन बिहार की भाषा प्राकृत एवं लिपि ब्राह्मी थी।
- पाटलिपुत्र में हुई प्रथम जैन संगीति के पश्चात् विचारों को लेकर जैन आचार्यों के बीच इतने मनभेद उभर आए कि जैन धर्म दिगम्बर एवं श्वेताम्बर में विभाजित हो गया। बाद के क्रम में दिगम्बरों से समैया तथा श्वेताम्बरों से तेरापंथी अलग हो गए। दोनों नये समूहों ने मूर्ति पूजन को त्याग दिया और ग्रंथ पूजन, अध्ययन-मनन, आचरण आदि को पूज्य माना।
- श्वेताम्बरों का पवित्र साहित्य प्राकृत के अर्श अथवा अर्धमागधी में लिखा गया यह 12 अंगों, 10 प्रकीर्णी 6 छेदसूत्रों, 4 मूल सूत्रों तथा 2 विविध ग्रंथों में वर्गीकृत किया गया। सभी लेखन बिहार में हुई थी।
- जैनकालीन मगध के लोग प्राय: कर्मकाण्ड के विशेष पाबन्द न थे। वेद में ऐसे लोगों को 'व्रात्य' कहा गया है। व्रात्य लोग कर्मकाण्ड के बजाए सदाचार, व्रत, उपवास आदि आत्मशुद्धि के साधनों पर अधिक विश्वास रखते थे। मनुस्मृति में लिच्छवी, विदेश, मल्ल आदि गणराज्यों के लोगों को झात्य कहा है अर्थात वे जैन धर्मावलम्बी थे।

23वें तीर्थंकर पार्श्व

- 23वें तीर्थंकर पार्श्व ने बिहार के श्री सम्मेद शिखर पर निर्वाण प्राप्त की थी। पार्श्व काशी के राजकुमार थे जैन साहित्य में वर्णित है कि ई. पू. 10वीं सदी में काशी के राजा अश्वसेन की पत्नी वामा से पार्श्व का जन्म हुआ था। काशी नरेश अश्वसेन जैन धर्मावलम्बी थे। राजकुमार पार्श्व भी जैन आचरण पर ही चलते थे। 30 वर्ष की उम्र में गृहस्थी का सुख भोगने के बाद प्रव्रज्या ली और 84 दिनों के ध्यान के बाद बिहार के सम्मेद शिखर पर सब विकारों को जीतकर अहर्त या जिन (जीतनेवाला) बन गए। वे जैनियों के 23वें तीर्थंकर कहलाए। तब से बिहार के श्री सम्मेद शिखर को 'पार्श्वनाथ पहाड़' (पारसनाथ) कहा जाने लगा। (अब झारखण्ड)

वर्धमान महावीर) का जन्म

- राजकुमार वर्धमान (महावीर) का जन्म वैशाली के कुण्डग्राम (वर्तमान वसुकुण्ड) में 540 ई. पू. हुआ था। राजकुमार वर्धमान का पूरा परिवार जैन ज्ञातृक थे और तीर्थंकर पार्श्व के अनुयायी थे। राजकुमार वर्धमान की रूचि आरंभ से ही आत्मशुद्धि के लिए व्रत करने की रही थी। बड़े होने पर वर्धमान का विवाह राजकुमारी यशोदा के साथ हुआ। उन्हें प्रियदर्शना नामक पुत्री हुई।
- माता-पिता त्रिशला और सिद्धार्थ की मृत्यु के पश्चात राजकुमार वर्धमान गृहस्थ आश्रम त्यागकर 30 वर्ष की आयु में प्रव्रज्या के लिए भाई नन्दिवर्धन से अनुमति प्राप्त कर घर से निकल पड़े। 12 वर्षों तक भ्रमण और कठिन तपस्या के पश्चात् वर्धमान ऋम्भिक गाँव के बाहर, ऋजुपालिका नदी के उत्तरी तट पर वट वृक्ष के नीचे उन्हें 42 वर्ष की आयु में कैवल्य प्राप्त हुआ तब ये अहर्त (पूज्य) जिन (विजेता) निर्ग्रन्थ (बन्धनहीन) और 'महावीर' कहलाए। पार्श्व के सम्प्रदाय में उसके बाद सबसे बड़ा अहर्त (पूज्य) होने तथा उसमें नए सुधार करने से ये तीर्थंकर (पार उतरने का रास्ता बताने वाला) कहलाए। 23वें तीर्थंकर पार्श्व ने अपनी शिक्षा में सत्य, अहिंसा, अस्तेय और अपरिग्रह पर अधिक बल दिया था। महावीर ने उसमें ब्रह्मचर्य जोड़ा।

महावीर द्वारा जिन दर्शन का प्रचार-प्रसार

- अहर्त होने के पश्चात् महावीर मगध, विदेह, वैशाली, अंग गणराज्यों में भ्रमण करते हुए उपदेश देते रहे। महावीर का अधिक समय मगध में ही बीता। मगध महावीर की प्रवृत्तियों का केन्द्र था, और उन्होंने यहाँ की अर्धमागधी में निर्ग्रन्थ प्रवचन का उपदेश दिया था। जिन (जैन) दर्शन का प्रचार करने के लिए एक संघ भी गठित किया था तथा अपने शिष्य इन्द्रभूति को दर्शन प्रचार का दायित्व सौंपा था। जैन कल्पसूत्र के तीन प्रभागों में प्रथम जैन-चरित में महावीर के पूर्ववर्ती 23 तीर्थंकरों का जीवन चरित है। इसके अनुसार पार्श्वनाथ की रखी नींव पर ही महावीर ने संघ स्थापित किया था।
- ज्ञान प्राप्ति के बाद महावीर ने अपना प्रथम उपदेश राजगृह में विपुलाचल पहाड़ी पर बराकर नदी के तट पर दिया। इन का प्रथम शिष्य जामाता जामालि था। वैशाली के राजा चेटक, जो इनके मामा थे, शिष्य बने। चम्पानरेश दधिवाहन, मगध सम्राट बिम्बिसार भी इनके शिष्य बनें। दधिवाहन की पुत्री राजकुमारी चन्दना इनकी प्रथम भिक्षुणी हुई।
- महावीर ने 11 अनुयायियों को लेकर एक संघ की स्थापना की। ये गणधर कहे गए। इन्हें अलग-अलग समूहों का अध्यक्ष बनाया गया 11 गणधर थे। इन्द्रभूति अग्निभूति वायुभूति व्यक्त, सुधर्मन, मंडित, मोरियपुत्र, अकपित, अचलभ्राता, मेतार्य, प्रभाष (कल्पसूत्र, आवश्यकचूर्णी)

- ज्ञान प्राप्ति के 12वें वर्ष में उनका शिष्य जामालि से मतभेद हो गया। मतभेद का कारण क्रियमाणकृत सिद्धान्त (कार्य करते ही पूरा हो जाना) था। इस मतभेद के कारण जामालि ने संघ छोड़ दिया और एक नये सिद्धान्त बहुरतवाद (कार्य पूरा होने पर ही पूरा माना जाएगा) का प्रतिपादन किया। इसके दो वर्षों बाद शिष्य तीसगुप्त ने भी संघ छोड़ दिया था।

मगध गणराज्य

- जैन साहित्य में मगध को एक प्राचीन देश कहा गया है और इसकी गणना सोलह जनपदों में की गयी है। महावीर के समय मगध देश का प्रमुख नगर होने के कारण राजगृह को मगध पुर भी कहा जाता था। जैन ग्रंथों में इसे क्षिति प्रतिष्ठत, चणकपुर. ऋषभपुर अथवा कुशाग्रपुर भी कहा गया है। पांच पहाड़ियों से घिरे रहने के कारण इसे गिरिव्रज भी कहा जाता था। जैन परम्परा में इन पहाड़ियों के नाम हैं- विपुल, रत्न, उदय, स्वर्ग और वैभार ये पहाड़ियों आज भी राजगृह (राजगीर) में मौजूद है और पवित्र मानी जाती है। इनमें वैभार और विपुल का जैन धर्म में विशेष महत्व है। महावीर ने राजगृह में अनेक चतुर्मास व्यतीत किए थे। यहाँ गुर्णासल और मोग्गरपाण आदि चौत्य थे, महावीर प्राय: गुर्णासल (वर्तमान गुणावा) चौत्य में ठहरा करते थे (जैन ग्रंथ ज्ञातृधर्म कथा एवं व्याख्याप्रज्ञप्ति)
- 24वें जैन तीर्थंकर महावीर के कई उपनाम भी थे - निय ज्ञातृपुत्र, नयपुत्र, कासव, वेसालीय, विदेहदीन, निगंठनाथपुत्र (बौद्धों के अनुसार) तथा जिन आदि।
- जैन ग्रंथ कल्पसूत्र के अनुसार महावीर करीब 14 वर्षों तक नालंदा में निवास किए थे।

चम्पानगरी (अंग देश की राजधानी)

- चम्पा अंग गणराज्य की राजधानी थी। इसका दूसरा नाम मालिनी था। महावीर गाँव-गाँव विहार करते हुए चम्पानगरी में आकर पूर्णभद्र नामक चौत्य में उतरे। यह चम्पानगरी के उत्तर-पूर्व में स्थित थी।
- मगध सम्राट बिम्बिसार ने अंग देश को जीतकर मगध में मिला लिया था और अताजशत्रु को अंग का उपशासक बनाया था। अजातशत्रु उपशासक बनकर चम्पानगरी में रहने लगा था तभी निक को वार्तानिवेदक से महावीर के आगमन की सूचना मिली। महावीर के चम्पानगरी आगमन पर नगरवासी उनके दर्शन के लिए उमड़ पड़े थे। (जैन ग्रंथ औपपातिक सूत्र)
- दधिवाहन चम्पा का दूसरा उल्लेखनीय राजा हुआ था। उसकी कन्या वसुमती (चंदन बाला) महावीर की प्रथम शिष्या थी। वह तीर्थंकर महावीर से प्रभावित होकर जैन साध्वी बन गयी थी, जो बहुत समय तक जैन श्रमणियों की अग्रणी भी रही जैन ग्रंथों ज्ञातृधर्म कथा एवं उत्तराध्ययन सूत्र के अनुसार चम्पा और मिथिला में साठ योजन का अंतर बताया गया है। चम्पा के दक्षिण में लगभग 16 कोस की दूरी पर मंदारगिरि नाम का एक जैन तीर्थ था जो आजकल मंदारहिल के नाम से प्रसिद्ध है। भागलपुर के पास वर्तमान नाथनगर को प्राचीन चम्पा नगरी के रूप में पहचान की गई है।

विदेह में महावीर का विहार

- विदेह (तिरहुत) मगध गणराज्य के उत्तर में अवस्थित था। कल्पसूत्र में वज्जनगरी (वृजिनगर) नामक जैन श्रमणों की शाखा का उल्लेख है। विदेहवासी होने के कारण महावीर की माता त्रिशला विदेहदत्ता (कल्पसूत्र) तथा विदेहवासी चलना का पुत्र कूणिक (अजातशत्रु) वज्जिविदेह पुत्र कहा जाता था (व्याख्याप्रज्ञप्ति)। महावीर के समय विदेह व्यापार का प्रमुख केन्द्र था। जनकपुर (मिथिला) विदेह की राजधानी थी। महावीर ने यहां अनेक बार विहार किया था, उन्होंने यहां छह वर्षावास किया था। मैथिलिया जैन श्रमणों की शाखा थी। आर्य महागिरि का यहाँ विहार हुआ था। (आवश्यक नियुक्ति भाष्य) अंकपित गणधर की यह जन्मभूमि थी। जिन प्रभसूरि के समय मिथिला जगई नाम से प्रसिद्ध था।

वैशाली में महावीर का विहार

- वैशाली (बसाढ, मुजफ्फरपुर) विदेह की दूसरी राजधानी थी। यहां के लोग लिच्छवी कहलाते थे। महावीर ने यहां बारह चातुर्मास व्यतीत किए थे (कल्पसूत्र)। यह नगरी महावीर की जन्मभूमि थी इसलिए लोग वैशालीय कहे जाते थे। वैशाली का राजा चेटक था चेटक की बहन त्रिशला महावीर की माता थी (आवश्यकचूर्णी) कुण्ठपुर वैशाली का उपनगर था। कुण्डपुर को महावीर की जन्मभूमि माना गया है। (व्याख्याप्रज्ञप्ति)
- महावीर के समय मलय जनपद पाटलिपुत्र (पटना) के दक्षिण में अवस्थित था जो सुन्दर वस्त्रों के लिए विख्यात था। भदिलपुर मलय की राजधानी थी। मलय जनपद के लोग जैन धर्मावलम्बी थे।

महावीर का निर्वाण

- महावीर का निर्वाण 468 ई. पू. बिहार के पावापुरी अथवा मध्यम पावा में 72 वर्ष की आयु में हुई थी। अंतिम उपदेश भी उन्होंने पावापुरी में ही दिया था। महावीर चातुर्मास व्यतीत करने के लिए हस्तिपाल नामक गणराजा की रज्जुगसभा में ठहरे थे। चौथा महीना लगभग आधा बीतने को आया। इस समय कार्तिकी अमावस्या के प्रात:काल महावीर ने निर्वाण लाभ प्राप्त किया। इस समय काशी तथा कोशल के नौ मल्ल और नौ लिच्छवी नामक 18 गणराजा उपस्थित थे। उन्होंने इस पुण्य अवसर पर सर्वत्र दीपक जलाकर उत्सव मनाया (जैन कल्पसूत्र)। महावीर के निर्वाण-पद पाने के पूर्व यह नगरी अपापा कही जाती थी, महावीर के निर्वाण के पश्चात इसका नामकरण पापा (पावापुरी) हो गया। इस नगरी का विस्तार जैन ग्रंथों के अनुसार 12 योजन बताया गया है।
- 24वें तीर्थंकर महावीर का काल 540 ई.पू. से 468 ई.पू. तक रही थी।

महावीर निर्वाण के पश्चात

- महावीर के निर्वाण के पश्चात् उनके 11 गणधरों (शिष्यों) में से सुधर्मन को जैन संघ का थेर बनाया गया। इनकी महावीर के बाद 20 वर्ष बाद मृत्यु हुई। उनके उत्तराधिकारी जंबु अगले 44 वर्षों तक थेर रहे थे।
- नंद शासन के समय दो थेरों- संभूति विजय एवं भद्रबाहु का उल्लेख मिलता है। इन दोनों ने प्राचीन जैन ग्रंथों में संशोधन किए थे।
- महावीर द्वारा संस्थापित जैन संघ के माध्यम से जैन दर्शन का प्रचार-प्रसार किया जाने लगा। जैन दर्शन के प्रचार में आनन्द, सुरदेव, महासयग, कुण्डकोलिय, नन्दिनीपीया, कामदेव आदि महावीर के शिष्यों ने आरंभिक कार्य किए थे।
- जैन दर्शन के प्रचार क्रम में महावीर का घोषाल के साथ नालंदा में भेंट हुई थी। छह वर्षों तक दोनों ने जैन दर्शन का प्रचार मगध में किया था।

पाटलिपुत्र

- पाटलिपुत्र (वर्तमान पटना) मगध की दूसरी राजधानी थी। उसे कुसुमपुर, पुष्पपुर अथवा पुष्पभद्र भी कहा जाता था। जैन साहित्य में पाटलिपुत्र की गणना सिद्ध क्षेत्रों में की गयी है। जैन आगमों के उद्धार के लिए यहां जैन श्रमणों का प्रथम सम्मेलन हुआ था, जो पाटलिपुत्र वाचना के नाम से प्रसिद्ध है। इस नगर में जैन आचार्य भद्रबाहु आर्यमहागिरि, आर्य सुहस्ति वज्रस्वामी आदि ने विहार किया था। यह नगर व्यापार का बड़ा केन्द्र भी था।
- प्राचीन जैन साहित्य में मगध सम्राट बिम्बिसार का उल्लेख है। महावीर के समय मगध का सम्राट बिम्बिसार ही था। बिम्बिसार का विवाह लिच्छवी राजा पेटक की पुत्री राजकुमारी चेलना (विदेईता) के साथ हुआ था (जैन ग्रंथ ललितविस्तर)। बिम्बिसार ने अंग देश को जीत कर मगध में मिला लिया था और राजकुमार कुणिक (अजातशत्रु) को वहाँ का उपशासक नियुक्त किया था जब राजकुमार कुणिक चम्पानगरी में निवास कर रहा था, उसी दौरान तीर्थंकर महावीर का चम्पा नगरी में आगमन हुआ था।
- बिम्बिसार के दो पुत्रों- हल्ल तथा बेहल्ल महावीर से प्रभावित होकर जैन संघ में सम्मिलित होते हुए प्रव्रज्या ले ली थी।
- जैन साहित्य में लिच्छवियों के साथ-साथ विदेह राजा एवं बज्जी संघ के प्रमुख चेटक और उसकी बहन त्रिशला (महावीर की माता) का उल्लेख है।

जैन धर्म से सम्बन्धित अन्य बातें

- ऋग्वेद की ऋचाओं मे दो जैन तीर्थंकरों पहले तीर्थंकर ऋषभदेव और 22वें तीर्थंकर अरिष्टनेमी का स्पष्ट उल्लेख है।
- जैन धर्म के आगमशास्त्र को वेद में सम्मिलित कर लिया गया था।
- विष्णु एवं भागवत पुराण में पहले जैन तीर्थंकर ऋषभदेव का उल्लेख नारायण अवतार के रूप में हुआ है।
- जैन मुनि हेमचंद्र ने अपभ्रंश भाषा का व्याकरण बिहार में लिखा था।
- जैन आचार्यों एंव गणधरों ने साहित्य, शिक्षा, कला, संगीत, भाषा, ज्योतिषि, व्याकरण, गणित, अंकगणित आदि के क्षेत्र में मौलिक योगदान दिए हैं।
- दूसरी जैन संगीति का आयोजन वल्लमी में देवर्धि क्षमाश्रमण की अध्यक्षता में हुई थी। इस जैन-संगीति के पश्चात् 12 अंगों एवं उपांगों का अंतिम संकलन किया गया था।
- अखण्ड बिहार में पार्श्वनाथ पहाड़ी (श्रीसम्मेद शिखर), पावापुरी तथा राजगीर में जैन स्थापत्य स्मारक मौजूद हैं।
- महावीर ने अर्धमागधी प्राकृतभाषा में अपना उपदेश दिया था। उनके उपदेश के आधार पर उनके गणधरों ने आगमों की रचना की थी।
- राजघराने में पुत्रोत्पति, राज्याभिषेक के अवसर पर प्रजा का शुल्क माफ कर दिया जाता था, और कैदियों को जेल से छोड़ दिया जाता था। (जैन ग्रंथ-ज्ञातृधर्मकथा)
- प्राचीन नगरी वैशाली के भग्नावशेष वर्तमान बसाढ़ नामक गाँव में है, जो बुद्ध के पूर्व लिच्छवी गणराज्य की यहाँ राजधानी हुआ करता था। जैन साहित्यों में भी लिच्छवियों का वर्णन है।
- पटना के गुलजारबाग रेलवे स्टेशन के निकट कमलदह नामक क्षेत्र में एक प्राचीन जैन मंदिर है। मान्यता है। कि जैनाचार्य स्थूलभद्र के स्तूप के अवशेष यहीं मौजूद हैं। चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में प्रथम जैन संगीति की अध्यक्षता स्थूलभद्र ने की थी।
- बुलंदीबाग कुम्हरार से उत्तर-पश्चिम में अवस्थित है। इस स्थान पर सर्वप्रथम अंग्रेज पदाधिकारी वैडल ने 1892 में खुदाई करवाई थी। खुदाई उपरांत इस स्थान से मौर्यकालीन अवशेष प्राप्त हुए थे।
- जैन धर्म के अन्य नाम कुरूचक, यापनीय, श्वेतपट निर्ग्रन्थ आदि।
- प्राचीनतम जैन ग्रंथों को पूर्व कहा जाता है। इनकी संख्या 14 है। जैन साहित्य को आगम (सिद्धान्त) कहा जाता है। ये अर्धमागधी या मागधी या प्राकृत में लिखे गए हैं।
- **जैन साहित्य में बिहार**- आवश्यकचूर्णी (जिनदासगणि), वृहत्कल्पभाष्य (संघदासगणि), पाटलिपुत्र- वाचना, ज्ञातृधर्मकथा, दशवैकालिक चूर्णी (जिनदासगणि), स्वविरावलिचरित, निशीथ भाष्य की चूर्णी, उत्तराध्यनटीका स्थानांग, अर्थशास्त्र (कौटिल्य), व्याख्याप्रज्ञप्ति, व्यवहारभाष्य, अन्त:कृद्दशा, राजप्रश्नीय सूत्र, पिण्डनिर्युक्ति, उपाशकदशा, औपपालिक सूत्र, कुट्टिनीमत्, अभिधान राजेन्द्रकोष, भगवतीसूत्र, भद्रबाहुचरित, विपाकसूत्र, आवश्यक निर्युत्ति भाष्य-दीपिका, कल्पसूत्र,

सूत्रकृतांग, परिशिष्टपर्वन, स्थानांगटीका, जम्बूदीप प्रज्ञप्ति, विविध तीर्थ कल्प, प्राकृत शब्दानुशासन, महावग्ग, अनुयोगद्वार सूत्र, आचारांगचूर्णी आदि जैन ग्रंथों में वर्तमान बिहार के जैनकालीन अंग, मगध, वैशाली, विदेह आदि गणराज्यों के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक स्थितियों सहित व्यक्ति विशेष का भी वर्णन है।

- आज बिहार की कुल जनसंख्या 10,40,99,452 में मात्र 0.01 प्रतिशत ही जैन धर्मावलम्बी है (जनगणना 2011) । परंतु जैन धर्म आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व बिहार में लोकप्रिय व बहुसंख्यकों का धर्म हुआ करता था।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. जैन दर्शन के अनुसार संसार का वास्तविक कारण क्या है?
(A) ईश्वर (B) आदितत्व
(C) जीव (D) काल

2. जैन दर्शन के अनुसार आदितत्व हैं-
(A) 4 (B) 5
(C) 6 (D) 7

3. जैन दर्शन के अनुसार 'जिन' कहलाता है-
(A) मुक्त जीवन (B) मोक्ष
(C) कर्मक्षय (D) उपर्युक्त सभी

4. जैन धर्म में जीवन का अंतिम लक्ष्य है-
(A) तृष्णा जनित बंधन से मुक्ति
(B) ईश्वर की प्राप्ति
(C) सम्यक ज्ञान (D) सम्यक् दर्शन

5. विश्व का प्राचीनतम शास्त्रीय धर्म है-
(A) बौद्ध (B) जैन
(C) हिन्दू (D) इस्लाम

6. जैन धर्म कहाँ से विस्तार पाया था?
(A) मैसूर (B) गुजरात
(C) बिहार (D) कश्मीर

7. जैन धर्म के पहले तीर्थंकर थे-
(A) चन्द्रप्रभा (B) विमल
(C) ऋषभदेव (D) वसुपूज्य

8. 10वें तीर्थंकर शीतलनाथ का चरणचिन्ह कहाँ अंकित है?
(A) पाटलिपुत्र (B) चतरा
(C) भागलपुर (D) मुंगेर

9. 24 जैन तीर्थंकरों में से कितने तीर्थंकरों ने सम्मेद शिखर (पारसनाथ पहाड़) पर निर्वाण प्राप्त किया था?
(A) 18 (B) 19
(C) 20 (D) 21

10. पारसनाथ (श्री सम्मेद शिखर) किस तीर्थंकर के नाम पर पड़ा है?
(A) पार्श्वनाथ (B) ऋषभदेव
(C) महावीर (D) शीतलनाथ

11. श्री सम्मेद शिखर (पारसनाथ पहाड़) को प्राचीनकाल में कहा जाता था-
(A) समाधिगिररि (B) समिदगिरि
(C) मल्ल पर्वत (D) उपर्युक्त सभी

12. किस तीर्थंकर का जन्म मिथिला में हुआ था?
(A) अजितनाथ (B) मल्लिनाथ
(C) शीतलनाथ (D) नेमिनाथ

13. किस तीर्थंकर का जन्म चम्पापुरी (भागलपुर के निकट) में हुआ था?
(A) सुमतिनाथ (B) कुंथुनाथ
(C) वसुपूज्य (D) संपार्श्व

14. 20वें तीर्थंकर सुव्रतनाथ का जन्म कहाँ हुआ था?
(A) भागलपुर (B) चम्पापुरी
(C) नालन्दा (D) राजगृह

15. चन्द्रगुप्त मौर्य के समकालीन जैन आचार्य की पवित्र समाधि कहाँ है?
(A) चम्पापुरी (B) नालन्दा
(C) राजगृह (D) पटना

16. चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में प्रथम जैन संगीति का आयोजन कहाँ हुआ था?
(A) चम्पानगरी (B) राजगृह
(C) पाटलिपुत्र (D) आरा

17. प्रथम जैन संगिति की अध्यक्षता किस जैन आचार्य ने की थी?
(A) स्थूलभद्र (B) जिनदासगणि
(C) आर्य स्कन्दिल (D) नागार्जुन सूरी

18. किस जैन संगीति के पश्चात् जैन धर्म दिगम्बर एवं श्वेताम्बर में विभाजित हो गया था?
(A) प्रथम संगीति (B) द्वितीय संगीति
(C) तृतीय संगीति (D) चतुर्थ संगीति

19. दिगम्बर के उपसम्प्रदाय हैं-
(A) बीसपंथी (B) तेरापंथी
(C) समैयापंथी (D) उपर्युक्त सभी

20. 24वें जैन तीर्थंकर महावीर का काल था-
(A) 530 ई.पू. से 468 ई.पू.
(B) 540 ई.पू. से 468 ई.पू.
(C) 550 ई.पू. से 468 ई.पू.
(D) 560 ई.पू. से 468 ई.पू.

21. जैन धर्म के किस शास्त्र को वेद में सम्मिलित किया गया है?
(A) आगमशास्त्र (B) आचारांग
(C) धर्मकथांक (D) पिाकसूत्रांक

22. ऋग्वेद की ऋचाओं में किन दो जैन दीर्थंकरों का उल्लेख है?
(A) कुंथूनाथ - अजीतनाथ (B) चंद्रप्रभा- शीतलनाथ
(C) विमलनाथ - नेभीनाथ (D) ऋषभदेव - अरिष्टनेमि

23. जैन का शाब्दिक अर्थ है-
(A) मनोवेगों को वश में करना
(B) इंद्रियों को वश में करना
(C) मनोवेगों एवं इंद्रियों को वश में करना
(D) चित को वश में करना

24. निर्ग्रन्थ किन्हें कहा जाता था?
(A) जैनों को (B) बौद्धों को
(C) नाथपंथियों को (D) वैष्णववादियों को

25. 'पूर्व' किसके प्राचीन धार्मिक ग्रंथ है-
(A) जैनों के (B) बौद्धों को
(C) सिखों के (D) हिन्दुओं को

26. 24वें तीर्थंकर महावीर का जन्म कहाँ हुआ था?
(A) चम्पानगरी (B) मंदारगिरि
(C) कुण्डग्राम (D) पाटलिपुत्र

27. 24वें तीर्थंकर महावीर का अधिक समय कहाँ बीता था?
(A) मगध (B) चम्पानगरी
(C) मिथिला (D) वैशाली

28. महावीर ने किस भाषा में प्रवचन दिया करते थे?
(A) संस्कृत (B) अर्धमागधी
(C) हिन्दी (D) मैथिली

29. ज्ञान प्राप्ति के बाद महावीर ने अपना प्रथम प्रवचन कहाँ दिया था?
(A) चम्पानगरी (B) कुण्डग्राम
(C) पावापुरी (D) राजगृह

30. महावीर का पहला शिष्य कौन था?
(A) जामालि (B) अंकपित
(C) अचलभ्रात (D) मेतार्य

ANSWER SHEET

1. B	2. C	3. D	4. A	5. B	6. C
7. C	8. B	9. C	10. A	11. D	12. B
13. C	14. D	15. D	16. C	17. A	18. A
19. D	20. B	21. A	22. D	23. C	24. A
25. A	26. C	27. A	28. B	29. D	30. A

KHAN GLOBAL STUDIES
Kisan Cold Storage Campus, Musallahpur, Patna-6
KHAN SIR